आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902
डाक पंजीयन RJ/UD/29-150/2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 5 | अंक 11 | उदयपुर सोमवार 15 जून 2020 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

फुटपाथ पर सौ वर्ष से समाचार-पत्रों के साथ

- डॉ. तुक्तक भानावत -

उदयपुर में एक नहीं, अनेक ऐसे सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थान, संस्थाएं, क्लब, फाउण्डेशन, परिषद, ट्रस्ट, निगम, पीठादि केन्द्र हैं जो प्रशंसा तथा सम्मान के बिगुल बांकिये बजाते रहते हैं मगर भोलेनाथ जैसे सर्वत्र व्याप्त होकर भी कहीं नजर नहीं आते। किसी को चिढ़ाने के लिए ही सही, 'इलु-इलु हाय-हाय' कहते जरूर कभीकभाक सुनने को मिल जाता है।

बड़े नाम के वैज्ञानिकों ने बड़े-बड़े काम कर बड़े नाम कमाये। बहादुरों ने बड़ी बहादुरी दिखाकर बड़े नाम कमाये। न्याय के लिए राजा विक्रमादित्य, दान के लिए कर्ण, सत्य के लिए राजा हरिश्चन्द्र, प्रण के लिए महाराणा प्रताप, भक्ति के लिए मीरांबाई, वीरता के लिए रानी लक्ष्मीबाई, सौंदर्य के लिए रानी पद्मिनी अमर हो गए।

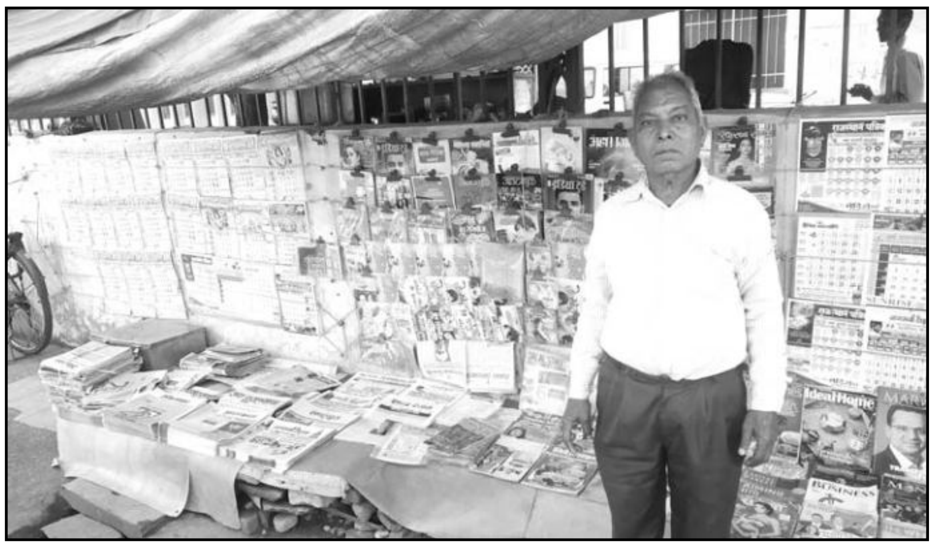

पर छोटे नामों के छोटे लोग भी मिल जायेंगे जिन्होंने बड़े हौंसले दिखाये। धन्ना जाट, सैन भगत, रैदास की सुमिरणी गांवों में अधिक है।

इनके साथ ही कुछ ऐसे नाम भी मिलते हैं जिन्होंने सर्वथा नया रोजगार शुरू करने की जोखिम उठाई। बापदादों ने जो काम प्रारम्भ किया उसे आज भी वे पूरी आस्था के साथ करने में गौरवान्वित महसूस करते हैं। मजे की बात यह है कि सबकी नजरों से गुजरते हुए भी चलती ट्रेन की तरह वह बेनजीर बना रह कर भी हमारे लिए नजीर बना हुआ है।

उदयपुर में देहलीगेट पर कलेक्ट्री के बाहर फुटपाथ पर समाचार पत्रों के बीच समाचार बने हेमेन्द्रकुमार अग्रवाल अपनी स्मृति को कुरेदते बहुत पीछे चले जाते हैं।

-शेष पृष्ठ सात पर

vedanta
transforming elements

HINDUSTAN ZINC
Zinc & Silver of India

सह-अस्तित्व
एक बेहतर कल के लिए

- डॉउ जोन्स सस्टेनेबिलिटि इंडेक्स द्वारा धातु एवं खनन क्षेत्र में एशिया पैसिफिक में पहला तथा विश्व स्तर पर पांचवां स्थान
- भारत में 2.41 गुना वाटर पॉजिटिव प्रमाणित कंपनी
- सभी ऑपरेशन्स आईएसओ: 14001 पर्यावरण प्रबन्धन प्रणाली से प्रमाणित
- जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों एवं पर्यावरण फूटप्रिंट को कम करने के लिए प्रतिबद्ध

World's leading integrated Zinc-Lead Producer
Among World's Top 10 integrated Silver Producer

Hindustan Zinc Limited
Yashad Bhawan | Near Swaroop Sagar | Udaipur - 313004 | Rajasthan | India | P : +91 294-6604000-02 | www.hzlindia.com | CIN - L27204RJ1906PLC001208
www.facebook.com/HindustanZinc | www.twitter.com/CEO_HZL | www.twitter.com/Hindustan_Zinc | www.linkedin.com/companyhindustanzinc

खोज-खबर

टोने के शिकार गवरी के खेल्ये

मादल और थाली की आवाज कानों में निरन्तर गूंज रही हो तो समझ लो गवरी का नाच हो रहा है। चौराहे-तिराहे पर या मन्दिर के प्रांगण में ठण्डी राखी से आदिवासी भील न जाने कब से मेवाड़ को गवरी से रसमय बना रहे हैं। राईबूड़िया के रूप में गवरी का नायक शिवजी भीलों के जंवाईराज हैं और राई के रूप में पार्वती बेन कुंवाई। त्रिशूल रोपी हुई है। उसके सहारे लाल झोली लटकी हुई है। पास में मादल वादक मादलिया और थालीवादक थालिया खड़े हैं। ये वादक ही पूरी गवरी की रौनक हैं।

यह गवरी कोई अन्यामन्या का खेल नहीं है। पूरी सृष्टि की रचना है। इस रचना के साक्षी देवी-देवता, मनुष्य, राक्षस, जल-जीव और पशु हैं। अमानवीय पक्ष का नाश होकर मानवता के श्रेष्ठ संबंधों का गुणानुवाद कर पृथ्वी पर समृद्धि और खुशहाली का तोहफा है गवरी। दुर्जनों का बोलबाला हर युग में, हर जगह रहा है। इस युग में तो यह अधिकाधिक है इसलिए गवरी नाचने वाले खेल्यों (खिलाड़ियों) पर दुश्मनों की बुरी नजर बनी रहती है। तंत्र-मंत्र, जादू-टोने सब चलते रहते हैं। इनसे कलाकारों का बचाव जरूरी होता है।

इसके लिए मादलिया बड़ा चौकस, स्फूर्तिवाला, प्रखर, प्रज्ञावान और नहले पर दहला दागने वाला होता है। उसे दृश्य-अदृश्य का सब कुछ अतापता रहता है। मादल बजाता हुआ वह पूरे खेल को रंजित किए रहता है और साथ-साथ सभी प्रकार के अनिष्टों से सबको बचाए रखता है। गवरी में कई तरह के खेल और उनके अनुसार नाचने वालों के पदचाप, लय, धुन तथा गायकी के स्वर उभरते हैं। मादलिया मादल पर भांति-भांति की घाई निकालता है। घाई के ऊब घाई, हिण्डोले घाई ,आड़ी घाई, भग मगल्या घाई, हणका घाई जैसे और भी कई नाम हैं।

गवरी रमने वालों पर सर्वाधिक मूठ फैंकी जाती है। यह मूठ भी बणजारा, मीणा, भोपा, भिंयावड़ जैसे खेलों पर जल्दी आती है। अपनी-अपनी गवरी श्रेष्ठ सिद्ध हो , इसलिए भी आपस में, गवरी के कलाकारों में होड़ाहोड़ी का खेल चलता रहता है।

कहीं से कोई मूठ आती देख अचानक मादलिया उसे रोकने के लिए अपना जूता आकाश की ओर फैंक देता है जो ऊपर ही अधर में फिरकनी की तरह घूमता रहता है। जब मूठ का असर कम हो जाता है तो वह मंत्र-बल से जूते को नीचे उतार लेता है।

दर्शक यह अचम्भा देखते ही रह जाते हैं परन्तु चूक किससे नहीं होती और सेर से सवा सेर भी मिलता रहता है, ऐसी स्थिति में कुछ अनिष्ट भी कभी-कभी घटित हो जाता है। ऐसा ही अनिष्ट नाथद्वारा के धोराघाटा में रमरही पूरी गवरी पर हुआ जो जादू-टोने का शिकार हो गई। भवानी माता की भागल में भी एकबार सबके सब कलाकार अकाल मौत के शिकार हो गए। उनकी स्मृति में वहां चीरे स्थापित किये गये जो आज भी उस दास्तान को जीवित किये हुए हैं।

स्त्री, पत्नी तथा प्रेमिकाओं के विभिन्न नाम

(1) अपछर अमरतभरी (2) अरधांगी (3) अलप अहारी (4) आभै के री बीजली (5) ऊजलदंती (6) काजल रेखी (7) कामणी (8) कूंझबच्चा (9) केलू कामठी (10) केलुसांव (11) केसर वरणी (12) खंजननैणी (13) गुलहंजा (14) गुमानण (15) गोरगियां (16) गोरी (17) घर री नार (18) चितराम री फूतली (19) चीतालंकी (20) चंद्रमुखी (21) चंदावदनी (22) छैलछबीली (23) छोटी लाड़ी (24) जग मीठी (25) जग व्हाली (26) जच्चा नखराळी (27) झालादेणी (28) झीणालंकी (29) झोलालेणी (30) डाबर नैणी (31) तनक मिजाजण (32) तनक मिजाजण मोवनी (33) तिरिया (34) दिन बतलावण (35) धण नखराळी (36) नवलवनी (37) नाजुकड़ी (38) नाजो (39) नादान बनी (40) नानकड़ी नार (41) उमराव बनीजी (42) कलहगारी नार (43) काजल टीली वाली (44) गवरादे (45) गुमेजण (46) गोरड़ी (47) गोरादे (48) जोड़ायत (49) दारी (50) धणियाणी (51) परणियोड़ी (52) प्यारी धण (53) भायां री बैनड़ (54) मिजाजण गोरी (55) मूमल (56) नखराळी मूमल (57) लाल लेरियावाली (58) वनखंड़ री कोयल (59) सदा ए सवागण सुंदर नार (60) सरदार बनीजी (61) हेतालू नार (62) नानड़िया री मांय (63) नार (64) नेनकड़ी नाजू (65) पदमणी (66) पड़दा पोढ़ण (67) परणी (68) पराणपियारी (69) पाताल पेटी (70) पातुड़ी (71) पातलड़ी (72) पिकबैणी (73) पूंगल री पदमणी (74) प्यारी (75) फूतली (76) बहू (77) वंस बधावण (78) धाम (79) भामण (80) भंवरिया री मांय (81) मरवण (82) मानेतणी (83) मारवणी (84) मारू (85) मारूणी (86) मिजाजण (87) मिरगानैणी (88) मिरगा लोचणी (89) मीठाबोली (90) मीठी मरवण (91) मूध (92) मला री रखवाळ (93) मोवनी (94) मंदगत (95) रमणी (96) रसीली (97) रात रिजावण (98) रायजादी (99) रंगभीनी (100) रंग रचावण (101) रंगीली (102) रंभा लाड़ी (103) लाड़ी (104) लाड़ीसा (105) लुगाई (106) वाम (107) वीनणी (108) सदा सुरंगी सदा सुगणी नार (109) सुवागण (110) सुंदर (111) सुंदर गोरी (112) सेजां री सिणगार (113) हरियाली (114) हिरणक्खियां (115) हंजा (116) हंसहाली।

नोट : अन्य कोई नाम हों तो कृपया भेजकर सहयोग करें।

मगरे जलाने की मनौती

मेवाड़ में मगरों अर्थात् पहाड़ों की अधिकता है। उन पर आदिवासियों की छितरी बस्ती भी होती है पर अधिकांश पहाड़ियां घने-छितरे जंगल के रूप में होती हैं जहां विविध प्रकार के पेड़-पौधे, नानाप्रकार के फल-फूल होते हैं जिन पर आदिवासी जनजीवन निर्भर रहता है।

मार्च-अप्रेल में जब गर्मी भयंकर पड़ती है तब आदिवासी मन्नत पूरी होने पर मगरा जलाते हैं। इसे वे मंगरा स्नान कहते हैं। इस समय लगभग हर पहाड़ आग से जलता, स्वाहा होता लगता है।

मगरा चूंकि उनकी आजीविका का मुख्य आधार होता है अत: वे मगरा बावजी (देवता) के रूप में उनकी पूजा करते हैं। ये देवता कहीं-कहीं अपने प्रतिनिधि भोपे के शरीर में साक्षात् हो भक्तों से सवाल-जवाब कर उनकी समस्याओं का समाधान करते हैं और भविष्यवाणी कर तदनुकूल आचरण करने की सीख देते हैं।

मगरों में आग लगने से नुकसान भी कम नहीं होता। कई बार मन में आता है, आदिवासियों में ऐसी प्रथा क्यों शुरू हुई ? कोई विशेष अर्थ नहीं रहा। एक मनौती के पीछे पूरे पहाड़ को अग्नि के हवाले कर सब कुछ जला देने, भस्म करने को अब उचित भी नहीं माना जाता है।

इस दृष्टि से पड़ताल करने पर कुछ अन्य बिन्दु भी हाथ लगते हैं। इस मौसम में पतझड़ होने से सारे वृक्ष अपने पत्ते छोड़ देते हैं जिससे पूरा वनांचल पत्तों से ढक जाता है। मुख्यत: महुए के पेड़ से जब पत्तियां खिर जाती हैं तो फूल दिखाई नहीं देते जबकि इन फूलों से आदिवासी शराब बनाते हैं।

भोजन की तरह उनका उपयोग करते हैं। खाते हैं और बाजार में बेचकर आर्थिक उपलब्धि अर्जित करते हैं। ऐसी स्थिति में वे पेड़ों के आसपास आग लगा देते हैं जिससे पत्तियां जल जाने पर फूल एकत्र करने में उन्हें सुविधा रहती है।

इन्हीं दिनों घरों पर छाया करने आदिवासी केलु, कवेलू बनाते हैं। उन्हें पकाने के लिए लकड़ी की आवश्यकता होती है सो जंगल से उन्हें सूखी लकड़ी उपलब्ध हो जाती है।

जरा सी असावधानी से भी जंगल आग पकड़ लेता है। बीड़ी-चलम पीने से, मधुमक्खियां उड़ाने के लिए धुंआ करने से, तेज हवाएं चलने से, गेहूं-जौ की फसल कटाई के बाद खेत में खड़े उनके डंठल, ठूंठ अथवा पराली जलाने से या फिर विद्युत लाइनों में स्पार्किंग से भी आग लगने फैलने की घटनाएं देखने को मिलती हैं।

आदिवासियों में यह भी धारणा है कि आग लगने से अनेक हानिकारक जीव-जन्तु, कीट-पतंगे जल मरते हैं। कुछ पौधे-पेड़ ऐसे भी होते हैं जो आग से झुलसने के बाद अधिक अच्छे और शीघ्रता से विकसित होते हैं। सागवान का बीज तो आग की हल्की आंच से ही ठीक से पनपता है। बहुत सी व्यर्थ की खरपतवार नष्ट होने से पूरा जंगल नये सिरे से, नई आभा के साथ फलता-फूलता है।

बावजूद इसके आग से अनेक उपयोगी जीव-जन्तु, उपयोगी कीट-पतंगे, पक्षियों के परिवार, उपयोगी फंगस और जंगलों पर निर्भर रहने वाले जीवों का अस्तित्व खतरे में पड़ जाता है।

तुलसी ने सुनाया प्रताप को भरत चरित

राणा प्रताप हमारे प्रणम्य हैं। वे अकेले ऐसे वीरवर हैं जो राष्ट्रीय स्वतंत्रता और स्वाभिमान की मशाल प्रदीप्त किए हुए हैं। कुछ यही सोच मानसकार महाकवि तुलसीदास को बार-बार टंकार देता रहा और वे निकल पड़े उस स्वातंत्र्यवीर योद्धा से मिलने जो मेवाड़ की आन बान और शान का तेजोमय सूर्य बन अकबर जैसे महान बादशाह के लिए संकट का सिरदर्द बना हुआ था।

घुमावदार चक्कर देते मगरे-मगरियों और गन्नाटे देती घाटियों के बीच गफलत देती गुमनाम गुफा तक पहुंचने वाले तुलसीदास को देखकर सैनिक सहम गया। कड़कती आवाज में बाहर ही रोक दिया गया और भीतर जाकर अन्नदाता से निवेदन किया- हुजूर, लगने को तो कोई बड़ा तेजस्वी पुरूष लगता है परन्तु वह यहां क्या करने आया है। कोई गुप्तचर भी हो सकता है। अपना नाम संत तुलसीदास बता रहा है।

युग के महान कवि संत तुलसी का नाम सुनते ही महाराणा प्रताप दौड़ पड़े। निगाहें नीची झुकी हुई देख तुलसी ने प्रताप को अपनी भुजाओं में भर हिरदे से लगा लिया। बोले- आप मेरे आराध्य देव के यशस्वी वंशज हैं। आदेश दें, आपके इस राष्ट्रीय महासमर में मेरा क्या योगदान हो सकता है। रानी ने पूजा का थाल लिए संत प्रवर की आरती उतारी और राजकुमार अमरसिंह ने शीतल जल से पांव पखारे।

अपने मानस पाठ में राम-भरत-मिलाप के प्रसंग से तुलसी ने पूरे सघन वन को अश्रु विगलित कर दिया। राम के अश्रु भरत के तथा भरत के अश्रु राम के वक्षस्थल को प्रेम की पीड़ से सहला रहे हैं। प्रताप का गला रूंध गया। बोले - आपने मेरी आंखें खोल दीं। अब यह भाला मानसिंह के विरूद्ध नहीं उठेगा।

अपने पास रखा हीरा नजर करते हुए तुलसीदास ने विदा ली। आगरा पहुंचकर कविवर रहीम से सारा हाल कह सुनाया। भरत-मिलाप का वही प्रसंग उसी बुलंदगी से सुनाया तब रहीम के साथ-साथ मानसिंह की आंखें भी सजल हो उठीं। बोले -अब मेरी तलवार किसी जातीय बंधु पर नहीं उठेगी।

तुलसीदास-प्रताप की मुलाकात के इस प्रसंग का इतिहास में कहीं उल्लेख नहीं है। कहा जाता है कि तुलसीदास ने मानस के पूर्व भरत चरित की रचना की थी। बाद में जब उन्होंने सम्पूर्ण रामचरित को भाषाबद्ध करने का निश्चय किया तो अयोध्याकाण्ड के रूप में यही भरत चरित उसका दूसरा अध्याय बना जिसे विद्वानों ने मानस के रचना-प्रसंग में सर्वाधिक सुंदर तथा काव्यशास्त्रीय कसौटी पर खरा उतरने वाला माना।

हिन्दी-राजस्थानी के प्रसिद्ध साहित्यकार ओंकारश्री ने बताया कि 1977 के उनके कोलकता प्रवास के दौरान रामकथा के महान मनीषी रामकिंकर ने भी तुलसी-प्रताप के मिलन को स्वीकार किया था। इस प्रसंग को कुछ विद्वानों ने लिखा भी है। तुलसी ने तब उदयपुर से बारह किलोमीटर दूर देबारी के पास जिस कुटिया में विश्राम किया वह तुलसी कोटड़ी नाम से जानी गई। इससे पूर्व मेवाड़ की राजरानी मीरांबाई को तुलसी द्वारा जाके प्रिय न राम वैदेही शीर्षक पत्र-पद लिखने का प्रसंग प्रसिद्ध है ही।

-शब्द रंजन टीम

स्मृतियों के शिखर (101) : डॉ. महेन्द्र भानावत

प्राचीन राजस्थानी साहित्य के सौभाग्य ही थे सौभाग्यसिंह शेखावत

उनकी प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा किसी पद या बड़ों की छाया के कारण नहीं है अपितु उनका सहृदयभावी शुद्ध आचरणमूलक गम्भीर और सटीक लेखन का ही चमत्कार है। उन्होंने श्रेष्ठ समझे जाने वाला सब कुछ छोड़ दिया मगर मसि-कागज नहीं छोड़ा इसीलिए वे हम सबके और आने वाले समय-काल के लिए पूज्य और नमनीय रहेंगे। वे उन बिरले व्यक्तियों में से थे जिन्होंने स्वयं डिग्रीधारी नहीं होकर अनेकों को डिग्रीवान बनाया।

राजस्थानी साहित्य, संस्कृति एवं इतिहास के क्षेत्र में श्री सौभाग्यसिंहजी शेखावत की देन शिलालेखीय है। महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि बिना किसी हो-हल्ले, यश-प्रसिद्धि और लालसा के वे चुप-मौन साधक बने निरन्तर सरस्वती की आराधना में लगे रहे। उन्होंने डिंगल-साहित्य की शोध-खोज और प्रकाशन कर सैकड़ों अज्ञात रचनाओं और रचनाकारों की सुध ली। उन्हें अकाल ग्रस्त होने से बचाया और सुकाल के कमल-सरोवर दिये।

राजस्थान व्यापी लोकसंस्कृति-साहित्य के शोध-सर्वेक्षण के समय उनके क्षेत्र की जानकारी मुझे उनसे समय-समय पर मिलती रही। मैंने उस सामग्री का उपयोग भी खूब किया। मुझे लगा कि उनका एक मन पारम्परिक सांस्कृतिक समृद्धि के उन्नयन, विकास और अजाने को ज्ञात करने में बड़ी दिलचस्पी लिये है।

शेखावतजी ने कई बार बड़े संघर्ष झेले। विपरीत परिस्थितियां भी कई बार उन्हें झकझोरने के लिए मुंह बांये खड़ी एवं तनी रहीं पर उन्होंने तनिक भी उनकी परवाह नहीं की और स्वाभिमानी शौर्य को जगाये रखा। उनकी प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा किसी पद या बड़ों की छाया के कारण नहीं है अपितु उनका सहृदयभावी शुद्ध आचरणमूलक गम्भीर और सटीक लेखन का ही चमत्कार है। उन्होंने श्रेष्ठ समझे जाने वाला सब कुछ छोड़ दिया मगर मसि-कागज नहीं छोड़ा इसीलिए वे हम सबके और आने वाले समय-काल के लिए पूज्य और नमनीय रहेंगे।

शेखावतजी उन बिरले व्यक्तियों में से थे जिन्होंने स्वयं डिग्रीधारी नहीं होकर अनेकों को डिग्रीवान बनाया। अनेक विषय के वे गम्भीर और पढ़ाकू अध्ययनन्वेषी थे। उदयपुर के साहित्य संस्थान में सन् 1963-66 के बीच मेरा उनसे गाढ़ा सम्पर्क बना तब वे भी वहां सेवारत थे। वहां रह उन्होंने राजस्थानी बातों पर विशुद्ध कार्य किया। उनमें से कुछ का प्रकाशन भी हुआ। तब डॉ. मोतीलाल मेनारिया डाइरेक्टर थे।

मैंने वहां रह 'ब्रजराज-काव्य-माधुरी' तथा 'राणा रासो' जैसे ग्रन्थों का सम्पादन किया। उनमें से ब्रजराज काव्य माधुरी का प्रकाशन हुआ। इसमें मेवाड़ महाराणा जवानसिंह लिखित पदों का चार हस्तलिखित प्रतियों के आधार पर पाठ-सम्पादन है। महाराणा ने 'ब्रजराज' नाम से पद रचना की।

साहित्य संस्थान में तब कविराव मोहनसिंह राव के जिम्मे पृथ्वीराज रासो शब्दकोश के सम्पादन का कार्य था। उनके साथ उमाशंकर शुक्ल थे। राव साहब महाराणा भूपालसिंह के दरबारी कवि थे। वे तांगे में बड़े ठाठ से आते और संस्थान में भी उनका वही ठाठ बना रहता। उनकी बैठक गादी-मोड़े की रहती।

वे बड़े उदार मन और दरियादिल लिये आशु कवि और खिलाने-पिलाने के बड़े शौकीन थे। आलूबड़ा, जलेबी, फाफड़ा के साथ-साथ हमने उनके साथ रबड़ी-मालपुए के भी कई बार चटखारे लिये। उन पर मैंने 'कविराव मोहनसिंह' नाम से राजस्थानी में आगे जाकर एक कृति लिखी जिसका प्रकाशन केन्द्रीय साहित्य अकादमी, नई दिल्ली ने किया। रासो शब्दकोश का कार्य वर्षों तक चलता रहा किन्तु अपूर्ण ही रहा।

वहीं एक सांवलदान आशिया थे जिन्होंने ठिकानों में संग्रहित अनेक डिंगल गीतों का संग्रह किया। एक बिहारीलाल व्यास 'मनोज' थे जो सेटलमेंट से सेवानिवृत्त होकर आये थे। उन्हें अनेक दिलदार किस्से याद थे जो बड़ी रसिकता के साथ सुनाते थे। उन्हीं की तरह एक बासा नंदकिशोर व्यास थे। वे लिपिकार थे जो डॉ. मेनारियाजी के साथ कार्य कर चुके थे। उनके अक्षर बड़े सुन्दर तथा मोटी कलम के मोती जैसे चमकदार थे।

शेखावतजी कविरावजी के पास ही भटियाणी चोहट्टे में रहते थे। संस्थान में हमारे साथ कृष्णचन्द्र शास्त्री थे जो संस्कृत के उद्भट विद्वान थे। वे बनारस के थे। कहते, बनारस के पान ही नहीं, वहां का पानी भी अपनी ओप रखता है। कई बार अपनी बात को वजनी बताने के लिए वे अपने को बनारस का पानी होने का बंदा बताने की खूबी दिखाते थे।

जब उन्होंने राजप्रशस्ति महाकाव्य का सम्पादन हाथ में लिया तो उनके साथ मैं भी राजसमंद की नौ चौकी पाल पर प्रदर्शित 25 शिलालेखों के इम्प्रेशन लेने में साथ रहा। मेरे सम्पादन-कार्य में भी वे हर समय मेरे साथ रहे। साहित्य संस्थान के बाद वे मीरां कला मन्दिर और फिर महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन की नौकरी में चले गये। उन्होंने 'अन्वेषणा' नाम से शोधपत्रिका भी निकाली।

शेखावतजी हम सबसे अलग व्यक्तित्व लिये थे। वे पूरी आस्तीन का कफदार कमीज और खुली धोती पहनते थे जिसकी एक लंगी का पूरा किनारा पीछे की ओर खुला रहता। वे पांवों में नोकदार जूतियां पहनते।

कुर्सी पर बैठकर खुले पांव हिलाते आराम की मुद्रा में कभी दोनों हाथों से तो कभी एक हाथ से बारी-बारी से दोनों ओर की मूंछों के किनारों को बंट दे तीर सी तीखी मरोड़ी देते मिलते। गपशप के दौरान भी उनका साहित्यिक मिजाज डिंगली भाषा की खिड़की खुली रखते हुए ठाकुरों, उमरावों के किस्सों की रसगुल्ली चासनी में गुलाबजामुनी स्वाद बरकरार बनाये रखता। वे सबके साथ घुलते-मिलते हुए भी अपनी आइडेन्टी अलग बनाये रखते।

सौभाग्यसिंहजी साहित्य संस्थान के अलावा चौपासनी के राजस्थानी शोध संस्थान में रहे। वे जयपुर में भी रहे। सभी जगह के उनके खट्टे-मीठे अनुभव रहे। अनेक विद्वानों से सम्पर्क एवं पत्राचार रहा। उनके पास ऐसे पत्रों का विपुल संग्रह था जिसमें बहुत ही समृद्ध सामग्री की जानकारी मिलती है।

मेरे पास भी उनके लिखे कुछ पत्र सुरक्षित हैं। उनमें मुख्यत: वही जानकारी मिलती है जो मैंने समय-समय पर उनसे चाही या फिर उन विधाओं की अवस्थिति बाबत् जो उनके शेखावाटी क्षेत्र में हैं या नहीं, और यदि हैं तो किस स्थिति में हैं।

उनका अंतिम समय उनके भगतपुरा गांव में ही व्यतीत हुआ। एक पोस्टकार्ड यहां दे रहा हूं जो उन्होंने मुझे लिखा था। इसमें उन्होंने कोई तिथि नहीं लिखी पर मैंने प्राप्ति तिथि 26 सितम्बर 2008 लिख रखी है। यह कार्ड इस प्रकार है-

गांव पो. भगतपुरा
द्वारा खूड़, सीकर

प्रिय भाई महेन्द्रजी,
सप्रेम जयराम कृष्ण।

आशा है आप सपरिवार प्रसन्न हैं। यहां सब कुशल हैं। कई दिनों से आपका पत्र नहीं। लेखन-प्रकाशन कैसा चल रहा है। पिछले वर्ष साहित्य संस्थान उदयपुर से मेरे पत्राचार की पोथी 'पत्र प्रकाश' छपी है।

मेरे पास साहित्य शोधार्थियों के दो हजार से अधिक पत्र हैं। उनमें नई और अज्ञात सामग्री के स्रोत-सूत्र हैं। आप नजर निवासी हैं। कोई प्रकाशक-सम्पादक हो तो 'साहित्य शोधार्थियों के पत्र' नाम से छाप दें। मेटर भिजवादूंगा।

भाई देवजी कोठारी का भी इन दिनों पत्र समाचार नहीं। साहित्य संस्थान, प्रताप प्रतिष्ठान, देवकर्णसिंहजी, कृष्णचन्द्रजी शास्त्री, ओंकारश्री को फोन से मेरा वन्दे कहें। पत्र दें।

आपका
सौभाग्यसिंह शेखावत

इससे पूर्व 16 अगस्त 2007 के पोस्टकार्ड में उन्होंने लिखा- 'आप मित्रों-साथियों का निरन्तर स्मरण आता रहता है पर अब यात्रा कठिन हो गई है। पत्र-भेंट ही संभव है। मैं भगतपुरा ही रहने लगा हूं। मेरे तो कर-कम्पन की बाधा है। मेरे पास शोध-विद्वानों के हजारों महत्वपूर्ण पत्र हैं पर प्रकाशन की व्यवस्था नहीं हैं।'

मैं अपने द्वारा भारतीय लोककला मण्डल से सम्पादित मासिक 'रंगायन' और अन्य प्रकाशन उन्हें निरन्तर भेजता रहता। उत्तर में वे उसकी पहुंच और कभी-कभी अपना अभिमत लिखते। जब मैंने अपनी कविता-पुस्तक 'कोई-कोई औरत' उन्हें भेजी तो उन्होंने राजस्थानी में पोस्टकार्ड लिखा। राजस्थानी शोध संस्थान चौपासनी से 12 दिसम्बर 1980 को लिखा यह पत्र-

मानैता भाई भानावतजी,

'कोई-कोई औरत' री छिबी पठाई सो भरपाई अर देखबा में नाक नकस ओढ़ी पैरी सोहणी लखाई। घेरघुमेर घाघरा री ठौड़ सलवार नै लंहगां री ठौड़ पेंट फराक पैरी खाथी-खाथी फिरती-घिरती फुरतीली-सी नजर आई। चाखबा में कलमी आम री गिरी री मिठास पण कठै-कठै तांतणां दांतां में उळझ नै अटकाव-थमाव दिराई पण सरपट चालती, झोला खावती, मुंहड़ौ मचकावती, अंगड़ाई लिखावती दरसाई। इण जुग री नखराळी सौगात खातर बाल्टी-बाल्टी बधाई।

आपरौ
सौभाग्यसिंह शेखावत

चौपासनी में वे बहुत अधिक अपने अनुकूल वातावरण नहीं पा सके, इसका संकेत मुझे अपने साथियों से मिलता रहा। अन्तत: उन्होंने उससे मुक्ति ही पा ली और अपने गांव भगतपुरा को स्थायी निवास बनाया।

06 जनवरी 1984 के अन्तर्देशीय पत्र में उन्होंने लिखा- 'मैं एक दिसम्बर 1983 को चौपासनी से अपने गांव भगतपुरा चला गया। मेरी सेवानिवृत्ति का केश तो अधरझूल में ही लटक रहा है। मैं चौपासनी से अपना सारा सामान लेकर गांव आ गया और अब गांव में ही रहने का विचार है। यहां पुस्तकालय के लिए एक कमरा बनवा रहा हूं। होली तक निर्माण-कार्य सम्पन्न हो जाएगा।'

डॉ. देव कोठारी ने बताया कि जब वे अपनी पीएच. डी. के लिए चौपासनी गये तो पहलीबार शेखावतजी से उनकी भेंट हुई। शेखावतजी ने संस्थान में जितनी सामग्री थी, कोठारीजी के लिए सुलभ कर दी और अपने निजी संग्रह में संरक्षित सामग्री भी दिल खोलकर उन्हें सुलभ करा दी।

यही नहीं, उन दो दिनों के दौरान शेखावतजी ने अपने निवास पर ले जाकर जो भोजन और भ्रातृ-स्नेह का उमड़ाव दिया वह अभी भी मुझे शकुन दे रहा है। तब से अन्तिम समय तक शेखावतजी से मेरा आत्मीय सम्बन्ध रहा।

कोठारीजी ने मुझे यह भी बताया कि चौपासनी छोड़ने के पीछे शेखावतजी का जो कड़ुवा और दुखद पक्ष रहा वह उन्हें घनीभूत पीड़ा देता रहा। वहां निदेशक डॉ. नारायणसिंह भाटी से उनका तीया-छक्का ही रहा। उसकी एक वजह यह भी रही कि वहां उन्होंने जिस दिलचस्पी से जो शोध-कार्य किया उसका श्रेय उन्हें नहीं मिला। उस काल में ऐसी और भी शोध-संस्थाएं थीं जहां जिन्होंने जो काम किया उसका श्रेय उन्हें नहीं देकर अन्यों को दिया गया।

चौपासनी छोड़ने के बाद शेखावतजी 1979 में उदयपुर अपने मित्रों से भेंट करने आये पर अचानक अस्वस्थ हो गये। इस बीच उन्होंने डॉ. देव कोठारी को याद किया। कोठारीजी उनसे मिलने गये और उन्हें अस्पताल ले गये जहां डाक्टरों ने उन्हें हार्ट अटैक होना बताया और भर्ती कर लिया। वे एम. बी. हॉस्पिटल के आईसीयू में करीब तेरह दिन कोठारीजी की परिचर्या में ही रहे। इस बीच उनके सुपुत्र महावीरसिंह को भी बुला लिया गया। कोठारीजी के इस पारिवारिक आत्मीय सहयोग का, जब-जब भी वे उनसे बात करते, आभारमूलक जिक्र कर अत्यन्त भावुक हो जाते।

- शेष पृष्ठ सात पर

शब्द रंजन

उदयपुर, सोमवार 15 जून 2020

सम्पादकीय

संकट की घड़ी में संकल्प की मजबूती

कोरोना का मध्यकाल बड़ी असमंजस की स्थिति लिए है। प्रारम्भिक काल में कई बंदिशें थीं तब आमजन भयग्रस्त था। डर-डर कर जी रहा था। सब अपने-अपने घरों में कैद होने की स्थिति लिए सहमे-सहमे थे। उस दौरान कोरोना की आफत और आपातकाल देखा। सुनसान स्थिति देखी। सिकुड़-सिकुड कर रहना, जीना सीखा। जीवन ठप्प तो सारे काम ठप्प। न कहीं आना न कहीं जाना। अपनों से मिलने-मिलाने में भी संकोच।

जहां कोराना फैला वहां खरपतवार की तरह फैला। जलकुंभी की तरह पसरा। कुकुरमुक्ता की भांति भ्रमित किये रहा। सब जन खबरों के लिए चौकन्ने रहते। देश और दुनियां में कहां कैसे कोरोना सारे जहां को संतप्त कर रहा है। कभी दु:ख बढ़ जाता तो धड़कन तेज हो जाती। दूसरों का कोरोना बढ़ता सुन अपना सुख अधिक तुलता तो संतोष की सांसें टींटोड़ी की तरह आकाश में मुक्त विचरण करती लगतीं।

अब बंदिशें खुली हैं पर कोरोना का ग्राफ कम नहीं होकर बढ़ा है। जनजीवन की हलचल बढ़ी है। बरसात में मेंढकों की टर्र-टर्र की तरह बन्द जन उन्मुक्त हुआ। रोजगार का रास्ता खुला तो सड़कों चौराहों पर धंधा करने वाले बाहर निकले। अब तक आजीविका की चिंता की जकड़न में बन्द रहने वाले खुले में आये पर आमजन मन से मुक्त नहीं हुआ है।

बच्चों और बुजुर्ग बूढ़ों को तो अभी भी घर की सुरंग में ही दुबके रहना है। जो मौसम अब तक तपती दे रहा था अब बरसाती फुहार का भविष्य देने लगा है। बरसात जरूरी भी है तो बीमारियों का घर भी कहा जाता है। देश में कोरोना की आहट के साथ आक्रमण की गड़गड़ाहट भी है। कहते हैं, मुसीबत अकेली नहीं आती।

कोरोना की घर-घर खबर लेते कार्यकर्त्ता

उदयपुर (का. सं.)। कोरोना काल के दौरान देश के प्रत्येक गांव शहर में घर-घर दस्तक देते भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्त्ता जन-जन की सुध ले रहे हैं। इसके साथ ही वे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दूसरी बार के कार्यकाल का एक वर्ष पूर्ण होने पर जनता के नाम लिखा मोदीजी का पत्र भी हस्तांतरित कर रहे हैं।

अपने चार पृष्ठीय इस पत्र में मोदीजी ने आमजन को सम्बोधित करते लिखा कि देशवासियों ने लोकतंत्र की जिस सामूहिक शक्ति के दर्शन करा उन्हें सत्तासीन किया वह पूरे विश्व के लिए मिशाल बन चुकी है।

उन्होंने वर्ष भर में उनके द्वारा किये गये उल्लेखनीय कार्यों की उपलब्धियों की ओर संकेत करते बताया कि पिछले वर्ष में ऐतिहासिक निर्णयों और विकास की अभूतपूर्व गति के साथ देश आगे बढ़ा है फिर भी अभी बहुत कुछ करना बाकी है। देश के सम्मुख अनेक चुनौतियां और समस्याएं हैं। वैश्विक महामारी के कारण संकट की घड़ी तो है ही पर संकल्प की भी घड़ी है। ऐसे में हम सबको मिलकर अपना वर्तमान और भविष्य तय करते आगे बढ़ते विजयश्री प्राप्त करनी है। हमारे एक हाथ में कर्म और कर्त्तव्य है तो दूसरे हाथ में सफलता सुनिश्चित है।

कार्यकर्त्ताओं में भाजपा युवा मोर्चा प्रभारी आकाश वागरेचा, पार्षद कुसुम पंवार, महेश पालीवाल सहित कुछ सक्रिय कार्यकर्त्ता हैं।

माधवानी पीएचडी चेम्बर के कोर्डिनेटर बने

उदयपुर (विज्ञप्ति)। देश में उद्योगों और सरकार के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करने के लिये 1905 में स्थापित पीएचडी चेम्बर अपेक्स बॉडी उदयपुर के कोर्डिनेटर के रूप में एम स्क्वायर प्रोडक्शन एवं इवेंट सीईओए मुकेश माधवानी को पीएचडी चैम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री यपीएचडीसीसीआईद्धए राजस्थान के अध्यक्ष दिग्विजय ढाबरिया ने मनोनीत किया है। ढाबरिया ने बताया कि देश में सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्योगों के विकास में चैम्बर की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी चैम्बर उद्योगों को पहचान दिलाने में सफल रहा है।

जार सदस्यों का चार लाख का दुर्घटना बीमा

उदयपुर (का. सं.)। जर्नलिस्ट्स एसोसिएशन ऑफ राजस्थान (जार) उदयपुर इकाई के सभी सदस्यों का युनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस कम्पनी लिमिटेड की ओर से चार लाख का दुर्घटना बीमा करवाया गया। 11 जून 2020 को एक सादे कार्यक्रम में हिम्मतसिंह चौहान ने वरिष्ठ पत्रकार सुमित गोयल, डॉ. तुक्तक भानावत, अजयकुमार आचार्य, अल्पेश लोढ़ा, डॉ. रवि शर्मा को पोलीसी भेंट की।

जार जिलाध्यक्ष डॉ. तुक्तक भानावत ने बताया कि सभी सदस्यों का चार लाख रूपये का दुर्घटना बीमा करवाया गया है। इसके अन्तर्गत सड़क दुर्घटना, गिरना, सर्पदंश, इलेक्ट्रिक शॉक आदि तरह की दुर्घटनाएं शामिल हैं। साथ ही हमेशा के लिए आंशिक अंग भंग के तहत भी अधिकतम चार लाख रूपये तक की आर्थिक सहायता का प्रावधान है।

यदि दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति को दुर्घटना के कारण काम करने से अस्थायी रूप से अक्षम किया गया हो, मसलन, पैरों का फ्रेक्चर, हाथों का फ्रेक्चर आदि। ऐसे मामलों में डॉक्टर द्वारा बीमित व्यक्ति को बेड रेस्ट पर भेजा जाता है तो उसे कवरेज साप्ताहिक आधार पर प्रदान किया जाएगा। यह बीमा राशि के 1 प्रतिशत अधिकमत चार हजार रूपये साप्ताहिक तक सीमित है। कवरेज का भुगतान अधिकतम 100 सप्ताह या बीमित व्यक्ति की विकलांगता की अवधि के लिए किया जाएगा। हमेशा के लिए एक अंगभंग होने पर अधितम दो लाख रूपये तथा दो अंगभंग होने पर चार लाख रूपये बीमित व्यक्ति को मिलेगा।

बीमे के भामाशाह हंसा माइनिंग कम्पनी लिमिटेड के हिम्मतसिंह चौहान ने बताया कि पत्रकार समाचारों के लिए दिन-रात फील्ड में कार्य करते रहते हैं। इस दौरान कई बार जोखिम भरी स्थितियां भी सामने आती हैं फिर भी वे सटीक खबरें पाठकों व दर्शकों तक पहुंचाते हैं। कोरोना महामारी के दौरान भी पत्रकार अपने दायित्वों का पूरी निष्ठा के साथ निर्वहन कर रहे हैं। ऐसे में पत्रकारों के लिए इस प्रकार का बीमा बहुत उपयोगी है।

कल्लाजी सम्प्रदाय के दो पीठाधीश नहीं रहे

उदयपुर (का. सं.)। अखिल भारतीय कल्लाजी सम्प्रदाय के राष्ट्रीय संरक्षक एवं मईया धाम, केशरियाजी के पीठाधीश्वर गणेशलालजी रावल का हृदय गति रुकने से निधन हो गया। वे पिछले कुछ समय से अस्वस्थ थे। मंदिर परिसर में उनका अंतिम संस्कार सम्पन्न हुआ।

गणेशलालजी रावल तथा प्रेमशंकरजी शर्मा

इस अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष महंत महेन्द्रसिंह चौहान ने उनको चादर ओढ़ाई। राजपुर के महंत गोपालदास वैष्णव, उदयपुर के अशोक परिहार तथा नारायणदास वैष्णव, भेणा के कचरुलाल पाटीदार, गुलाबपुरा के राजेन्द्रसिंह चूण्डावत तथा मनोज रावल, डूंगरपुर के देवसोमनाथ के बीरबलसिंह चौहान, बिछीवाड़ा के मदनसिंह चौहान तथा मिट्ठालाल चित्तौड़ा, डॉ. हेमंत जोशी, सुशील चित्तौड़ा आदि ने साफा, श्रीफल व अंग वस्त्र अर्पित करते हुए श्रद्धांजलि दी। इसी प्रकार चित्तौड़गढ़ किला स्थित कल्लाजी की छतरी के गादीपति एवं सम्प्रदाय के सलाहकार महंत प्रेमशंकरजी शर्मा का सड़क दुर्घटना में निधन हो गया।

उल्लेखनीय है कि कल्लाजी राठौड़ अद्वितीय पौरुष एवं शौर्य के धनी थे। अकबर के खिलाफ युद्ध के दौरान जयमल-पत्ता के साथ उनकी विजयकथा रूण्ड के देवता के रूप में प्रसिद्धि लिये है। देवी के आशीष से उन्होंने जयमलजी को अपने बलिष्ट कंधों पर बिठाकर जो पराक्रम दिखाया वह अतुलनीय ही है। मुण्ड रहित होकर रूण्ड रहते हुए भी वे धराशायी नहीं हुए और दुश्मनों का मुकाबला करते चित्तौड़ से सवा सौ किलोमीटर दूर सलूम्बर से आगे जाकर उनका रूण्ड गिरा। वहां उनकी याद में बसा गांव रूंडेला उनकी यशोगाथा का साक्षी बना हुआ है।

अशोकजी परिहार ने बताया कि चित्तौड़ के किले पर जहां उनका मुण्ड गिरा वहां उनकी स्मृति में छतरी बनी हुई है। प्रेमशंकरजी उस स्थल पर उनकी याद में जो गादी-परम्परा प्रारम्भ हुई, उसके गादीपति थे। प्रति रविवार वहां चौकी लगकर अनेक श्रद्धालु आस्थाजनों की समस्याओं का निदान होता। यहां पहलीबार 1977 में गादी स्थापित होकर परचा प्रारम्भ हुआ। रूंडेला में वर्तमान गादीपति शंभूसिंहजी हैं। लोकदेवता के रूप में कल्लाजी का पहला परचा ही रूंडेला से प्रारम्भ हुआ। डॉ. महेन्द्र भानावत ने लोकदेवता वीर कल्लाजी राठौड़ नाम से एक प्रामाणिक पुस्तक का प्रकाशन किया जिसका द्वितीय संस्करण सन् 2019 में राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर से प्रकाशित हुआ।

अशोकजी परिहार के अनुसार रूण्डेला के शम्भूसिंह राठौड़, वीरपुरा के मोहनलाल शर्मा, सेमारी के संत फलाहारी महाराज, निम्बाहेड़ा के कैलाश मुन्दड़ा, बड़ीसादड़ी के खुमाणसिंह राठौड़, रेलमगरा के पंकज सनाढ्य, लुनावाड़ा के बीन्देश सोनी, गंगाखेड़ी के प्रतापसिंह राठौड़, भीण्डर के राजेन्द्रसिंह राजावत, भीलवाड़ा के नारायणलाल पड़िहार, बनवारीलाल दमामी तथा राजेशकुमार बादलिया, मोरड़ी के सुरेश जानी, कुराबड़ के धर्मराज चन्देल, देबारी के दीपक शर्मा, नोगामा के सूर्यवीरसिंह चौहान तथा पुष्पेन्द्रसिंह चौहान, चोपासाग के धर्मेन्द्र शुक्ला, आसोड़ा के हितेश पण्ड्या तथा संजय पण्ड्या, उदयपुर के मदनसिंह चौहान, ईश्वरलाल शर्मा, राजकुमार सोनी, सतीश भाणावत, लालचन्द चौधरी तथा प्रवीण सुथार, वलाद के अनिलकुमार वैष्णव, झाबुआ के संतोषसिंह गहलोत, थांदला के नारायण गुरुजी, माण्डव के त्रिभुवनसिंह चौहान, वरदा के चन्द्रदीपसिंह चौहान, बिलड़ी के दलपतसिंह चौहान, करावड़ा के कांतिलाल परमार, बनकोड़ा के देवीसिंह चौहान, डोला के भरतलाल अहारी, आसपुर के अटल वैष्णव, पाली के जब्बरसिंह राजपुरोहित, गेहुंवाड़ा के नवदीपसिंह शक्तावत, झाम्बड़ा के चन्द्रवीरसिंह चूण्डावत, सैलाना के रामसिंह शक्तावत, धरियावद के जगदीश सालवी, डेचा के जोरावरसिंह चौहान, जावद के कैलाश तोषनीवाल, कल्याणपुरा के शंकरलाल रायका, अहमदाबाद के सोमनाथ खेड़कर, बांसवाड़ा के विजयसिंह राठौड़, भारतसिंह चौहान, अजयसिंह राठौड़, अजीतसिंह चौहान, रमेश व्यास, आशीष दोशी तथा चन्द्रकांत पाठक ने भी श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

कानोड़ के कमनीय रत्नों में थे सुन्दर मुर्डिया

मेवाड़ में कानोड़ शिक्षा की नगरी के साथ-साथ और क्षेत्रों में भी पहचान लिये हैं। पं. उदय जैन ने सबसे पहले स्कूल खोला। शुरूआत में तीन विद्यार्थी ही थे। तब पढ़ना-पढ़ाना कोई आवश्यक भी नहीं था पर उदय जैन धुन के धनी और संकल्पित विचारों के कर्मशील एवं जागरूक व्यक्ति थे। स्नेह-सौहार्द तथा सहयोग-सेवा के गुणों से वे पूरे गांव में लोकप्रिय थे। आजादी के लिए भी वे अपने साथियों के साथ अग्रिम पंक्ति लिये थे। मैंने तथा अग्रज डॉ. नरेन्द्रजी भानावत ने वहीं से, उनकी प्रेरणा से अपना केरियर प्रारम्भ किया जो अन्त तक उनसे जुड़ाव लिये रहा।

हमारी तरह और भी साथी थे जो बाहर रहे और गांव छोड़ दिया। वहां रहने वालों में सर्वाधिक चर्चित सुन्दरलाल मुर्डिया थे जो उदय जैन के जवाहर विद्यापीठ में शिक्षक बने और उन्हीं से प्रेरित, शिक्षित एवं दीक्षित होकर उनके बाद उनकी दीप-शिखा को थाम कर छात्रावास संभाला और बड़ा सुयश पाया।

यह योगदान छात्रावास को सर्वप्रकारेण सुविधायुक्त बनाकर दूर-दूर तक के छात्रों द्वारा वहां विद्यार्जन हेतु प्रवेश करते आदर्श और संस्कारी छात्र-निर्माण के रूप में रहा। छात्रावास के साथ स्कूल प्रारम्भ करने का रहा। छात्रावास को सुविधायुक्त सुनियोजित पुस्तकालय देने का रहा। अध्ययन के साथ छात्रों के लिए जितनी आवश्यक इतर गतिविधियों के साथ समय-समय पर उत्सव एवं समारोह आयोजित करने का रहा। बच्चों की प्रतिभाओं को निखारने, उन्हें संगीत, नृत्य, नाट्य, अभिनय तथा साहित्यिक

सांस्कृतिक एवं खेलकूद जैसी प्रतियोगिताओं में कमाल दिखाने, उन्हें सम्मानित एवं पुरस्कृत करने के अवसर सुलभ कराने का रहा। समयचक्र के अनुसार समयबद्ध उसकी पालना करते जैनत्व के आचरण को सादगी एवं स्वावलम्बन के साथ आत्मस्थ करने का रहा।

इसके पीछे सुन्दरजी ने दिन देखा न रात, घर-गृहस्थी की परवाह किये बगैर छात्रावास को ही सम्पूर्ण समर्पण दे दिया। वे मेरे सहपाठी तो नहीं थे पर प्रारम्भ से ही साथ-साथ रहे। यों सम्बन्ध तो उनसे यही रहा कि मेरी माताजी उनकी माताजी की मौसी थी सो हमारा मैत्री सम्बन्ध डबलबंटी रस्सी की तरह अटूट गाढ़ापन लिये रहा।

कानोड़ छोड़ने पर भी वह छूटा नहीं। प्रमुख कारण वहां विपिनजी जारोली का होना रहा जिसने हर तरह की साहित्यिक चुहलबाजी होती। वे स्वयं साहित्यजीवी थे। सुन्दरजी उस रूप में साहित्यजीवी नहीं थे पर साहित्यजीवियों के साथ रंगदार बन धन्यभाग होने की गर्वोक्ति बनने में सदैव आगे रहते थे। मुझे कहते रहते, कभी भी यहां साहित्यिक मजमा जोड़ने का मन में आ जाय तो मुझे इत्तल्लाभर करदें। मैं हर समय हर व्यवस्था के लिए तैयार मिलूंगा। उनसे जब भी बातचीत होती, वे इस बात का स्मरण दिलाते।

अपने गांव के प्रति मैंने भी अपना दायित्व समझा और उनके पूरे भरोसे, सम्बल और आस विश्वास पर राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर, राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी बीकानेर, पश्चिम क्षेत्र सांस्कृति केन्द्र उदयपुर और आकाशवाणी केन्द्र के सहयोग से साहित्य संगोष्ठियां, सिरजण समेले, संस्कृति संवाद तथा काव्य-गोष्ठियां आयोजित कराईं। सुन्दरजी ने बड़े उत्साह, उल्लास और मनोयोग से पलक पांवड़े बिछाते साहित्य संस्कृति चिंतकों तथा धुरंधर कवियों का अपने आंगन में स्वागत सत्कार किया।

इन आयोजनों में मेघराज मुकुल, बालकवि बैरागी, नंद चतुर्वेदी, डॉ. शान्ति भारद्वाज, डॉ. प्रकाश आतुर, देवकर्णसिंह राठौड़, ओंकारश्री, पुरुषोत्तम पल्लव, डॉ. नरेन्द्र भानावत, डॉ. राजेन्द्रमोहन भटनागर, डॉ. भगवतीलाल व्यास, डॉ. पुरुषोत्तम छंगाणी, डॉ. देव कोठारी, डॉ. लक्ष्मीनारायण नंदवाना, डॉ. ज्योतिपुंज, हरमन चौहान, प्रेमजी प्रेम, जयसिंह जौहरी, शिवकिशोर सनाढ्य, कमर मेवाड़ी, महेन्द्र मोदी, कविभूषण जगदीश, किशन दाधीच, विपिन जारोली, डॉ. इन्द्रप्रकाश श्रीमाली, माणिक आर्य, श्रेणीदान चारण, भैरोसिंह राव, शिव मृदुल, डॉ. रमेश 'मयंक', पृथ्वीसिंह चौहान आदि ने अपनी जीवन्त भागीदारी दे अपने को भी धन्य माना।

सभी कार्यक्रमों में छात्रों, अध्यापकों के अलावा गांव के विशिष्टों तथा रसिकजनों ने कानोड़ की धरा पर ऐसी ख्यात हस्तियों को पा गर्व महसूस किया।

सच तो यह है कि सुन्दरजी ने उदय जैन की तरह संकल्पित होकर अपना पथ प्रशस्त किया। शिक्षा के मानवीय सरोकारों तथा धार्मिक संस्कारों के गूढ़ वपन के लिए उन्होंने जवाहर छात्रावास जैसे गुरुकुल का संचालन कर सैकड़ों बालकों को संस्कारित किया। वे धर्मनिष्ठ थे और साम्प्रदायिक सौहार्द बढ़ाने के मामलों में सदा आगे रहे। कइयों के आदर्श मुर्डियाजी सदैव कर्मशील कठोरजीवी बने रहे। उन्होंने नींद में भी कभी विश्राम नहीं लिया और रात को जो स्वप्न देखा उसे दिन में ही पूरा कर दिखाया। ऐसे जीवन्त और निष्ठावान कार्यकर्ता हर कहीं और हर समय पैदा नहीं होते।

शहरों में तो काम करने वाले अनेक रूपों में चर्चित होकर अपनी पहचान देते हैं मगर गांवों में जो छोटे स्तर से उठकर बड़ा काम कर दिखाते हैं उन ग्राम्य-रत्नों की पहचान कर उनकी स्मृति बनाये रखने का जिम्मा स्थानीय मोतीबीरों को अपना कर्त्तव्य समझ कर प्राथमिकता से उठाना चाहिये। ऐसे में जुलाई 2005 में बिछुड़े सुन्दरजी मुर्डिया का योगदान लम्बे समय तक ध्वनित रहेगा।

-डॉ. महेंद्र भानावत

जैन गुरुकुल से प्राप्त सृजनांकुर वृक्ष रूप में

-डॉ. श्याममनोहर व्यास-

शब्द रंजन में लोकसाहित्य के मनीषी डॉ. महेन्द्रजी भानावत की संस्मरणात्मक लेख श्रृंखला पढ़ कर मेरे मस्तिष्क में भी 60-65 वर्ष पुरानी स्मृतियां जागृत हो गईं। मेरे पिताजी श्री औंकारलालजी व्यास छोटीसादड़ी कोर्ट में पेशकार थे। वहीं हमें क्वार्टर मिला हुआ था। कैदियों की जेल भी कचहरी में ही थी।

आजादी मिलने की प्रसन्नता में विद्यार्थियों को एक कक्षा की विशेष रियायत दी गई। विद्यालय के प्रधानाध्यापक भंवरलालजी 'परेशान' थे। वे एक कवि भी थे। सांस्कृतिक कार्यक्रम के पश्चात भोजन करने का कार्यक्रम होता। चादर फैला कर एक कोना प्रधानाध्यापकजी और दूसरा साथी अध्यापक थामे हर छात्र के पास जाते और अपने घर से लाये भोजन का एक अंश उसमें डालने को कहते। एकत्र भोजन को सभी शिक्षकगण ग्रहण करते। इससे छात्रों में भेदभाव व जाति संकीर्णता की भावना समाप्त होती।

उन दिनों गोदावत जैन गुरुकुल का बड़ा नाम था। वहां हाईस्कूल तक की पढ़ाई होती थी। मेरा प्रवेश उसमें 7वीं कक्षा में करा दिया। प्रधानाध्यापक श्री नेमिचन्दजी सुराणा थे। ईश वन्दना के पश्चात शिक्षक व छात्रों के प्रवचन होते। एक छात्र समाचार-पत्र से मुख्य समाचार उद्घृत कर सुनाता। यदाकदा अन्य शिक्षाविद् संत मुनिराज भी आते।

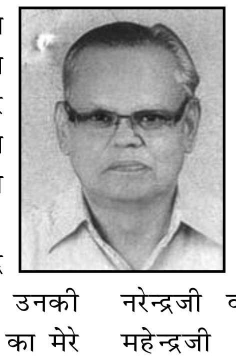

एकबार डॉ. सुधीन्द्र का काव्यपाठ हुआ। उनकी देशभक्ति पूर्ण कविताओं का मेरे जीवन पर व्यापक प्रभाव पड़ा। जैन धर्म के अनुशीलन से उसका प्रभाव भी मेरे पर पड़ा। गुरुकुल में राधामोहनजी पुरोहित, पुखराजजी जैन, हरिसिंहजी मेहता, सागरमलजी बीजावत, ज्ञानजी भारिल्ल सधे हुए शिक्षक थे। उनकी दृष्टि में मैं एक होनहार विद्यार्थी माना जाता था।

उदयपुर में जब मैं एसआईईआरटी में अनुसंधान अधिकारी था तो पुरोहितजी से पाठ्यपुस्तक निर्माण के सन्दर्भ में सम्पर्क रहा। ज्ञानजी भारिल्ल ने बीकानेर के शिक्षा विभाग की मासिक पत्रिका 'शिविरा' के प्रकाशन के साथ प्रतिवर्ष पांच सितम्बर शिक्षक दिवस पर विविध विधाओं की पांच पुस्तकें प्रकाशित करने की योजना बनाई। सन् 2008 में 'सृजन के रंग' का सम्पादन करने का मुझे भी मौका मिला। कक्षा दसवीं में गुरुकुल में हुई प्रतियोगिता में निबंध में मुझे प्रथम स्थान मिला। तब नरेन्द्रजी व उनके लघु भ्राता महेन्द्रजी भानावत भी वहां अध्ययनरत थे। वे मेरे से सीनियर थे। दोनों भाई कुशाग्र बुद्धि के मेधावी छात्र थे। अच्छे कवि व वक्ता भी थे। बालसभाओं में स्वरचित कवितायें सुनाते थे। अन्त्याक्षरी में वे प्रथम आते थे।

सन् 1955 में मैं हाईस्कूल में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ। ऐसा मैं एकमात्र छात्र था। सन् 1966 में मैं जब जिला शिक्षा अधिकारी के पद पर था तो गुरुकुल के निरीक्षण हेतु गया। वहां सूचनापट्ट पर अपना नाम अंकित देख पुरानी स्मृतियां जाग्रह हो उठीं। हाई स्कूल के बाद मैं महाराणा भूपाल कॉलेज, उदयपुर में पढ़ा। शंकरसहाय सक्सेना प्राचार्य थे। उनकी 'उज्ज्वल रत्न' मैंने नवमीं में पढ़ी थी।

कॉलेज में डॉ. डी. एस. कोठारी के लघु भ्राता दुल्हेसिंहजी कोठारी पढ़ाते थे। मेरी प्रथम रचना 'ईश्वर में आस्था' नाम से कल्याण के मार्च 1960 के अंक में छपी। एम.एस.-सी. गणित में भी मैं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ और अस्थाई रूप से राजकीय राजर्षि कॉलेज अलवर में नियुक्त हुआ। पारिश्रमिक देने वाली प्रथम पत्रिका 'रामतीर्थ' थी जो बम्बई से निकलती थी। मई 1963 में उसमें मेरी एक जीवनोपयोगी रचना छपी जिसका पारिश्रमिक दस रूपये मनिआर्डर से मिला। तब मावे की मिठाई चार रूपये किलो मिलती थी। मैंने ढाई किलो मिठाई खरीदी और भगवान को भोग लगा कर परिजनों व मित्रों को प्रसाद के रूप में बांट दी। मेरी रचनाएं नवनीत, कादम्बिनी, साप्ताहिक दैनिक हिन्दुस्तान, सरस्वती, बालसखा जैसी अनेक पत्रिकाओं में छपीं। चित्तौड़गढ़ में जिला शिक्षा अधिकारी के पद पर रहते प्रौढ़ एवं सतत शिक्षा विभाग के मुख पत्र 'आखर पन्ना' का एक वर्ष तक सफल सम्पादन किया। सन् 1980 में मेरी बाल कहानियों की पुस्तक 'टोकरी का न्याय' छपी। इसके पश्चात हिन्दी की विविध विधाओं में एक शतक से भी अधिक पुस्तकें तथा सात सौ पत्र-पत्रिकाओं में मेरी सात हजार रचनाएं छप चुकी हैं।

सन् 1985 की बात है। डॉ. महेन्द्रजी भानावत मेरे निवास पर आये। आध घण्टे के दौरान उन्होंने जानकारी लेकर दैनिक जय राजस्थान के 'चलते-चलते' स्तम्भ में 'श्याम व्यास : सबकुछ चुपचाप' शीर्षक से लिखा वह अक्षरश: सत्य था। लिखा- व्यासजी सद्गृहस्थ हैं। अन्तर्मुखी स्वभाव के हैं। चुपचाप साहित्य सृजन करते हैं। प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में छपते हैं। इन्हें लपसी खाना पसंद है।

आयु के सातवे दशक के अन्त में यह जीवनचक्र चल रहा है। मैं मानता हूं कि गोदावत जैन गुरुकुल के वातावरण ने मेरे में सृजन के अंकुर उत्पन्न किये जो वृक्ष के रूप में प्रकट हुए।

पत्रकारिता विभाग में वेबिनार

उदयपुर (विज्ञप्ति)। मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग की ओर से दो दिवसीय वेबिनार 'नए दौर की पत्रकारिता और चुनौतियां' विषय पर हुआ।

एनडीटीवी नई दिल्ली के सीनियर आउटपुट एडिटर राकेश तिवारी ने कहा कि महामारी के दौर में संकट ना सिर्फ मीडिया और जनता के बीच है बल्कि केंद्र और राज्य के बीच में भी है। पत्रकार जगत सबसे मुश्किल दौर से गुजर रहा है क्योंकि वह जान जोखिम में डाल कर हॉटस्पॉट इलाकों में रिपोर्टिंग कर रहा है। अधिष्ठाता प्रो संजय लोढ़ा ने मीडिया मासीफिकेशन के दौर में मीडियाकर्मियों की जिम्मेदारी ज्यादा बढ़ना बताया। सोशल मीडिया ट्रेडिशनल मीडिया के सामने एक बहुत बड़ी चुनौती बन कर खड़ा है उससे निपटने के लिए भी कमर कसनी होगी। ईटीवी भारत के सम्पादक नरेश दवे, हरिदेव जोशी पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. मनोज लोढ़ा, टीवी9 गुजराती के रिपोर्टर और एंकर जयेश पार्कर, दूरदर्शन के चन्द्रशेखर, जी न्यूज के संपादक मनोज माथुर, दैनिक भास्कर भोपाल के डिप्टी न्यूज़ एडिटर डॉ. देवेंद्र शर्मा तथा पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के प्रभारी डॉ. कुंजन आचार्य ने विषय प्रवर्तन किया।

कोरोना महामारी में टीएडी विभाग के अनूठे कदम

उदयपुर (विज्ञप्ति)। जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग ने कोरोना के दौरान उपजी विषम परिस्थितियों में जनजाति समुदाय को सहायता प्रदान करने के लिए कई कदम उठाए हैं। प्रत्यक्ष लाभ वाली योजनाओं में राशि का तुरंत भुगतान एवं संविदा स्टॉफ को नियमित भुगतान कर जरूरतमंदों को आर्थिक संबल दिया गया है वहीं दूरदराज के क्षेत्रों में आवश्यक सामग्री पहुंचाने, छात्रावासी बच्चों के लिए ऑनलाइन अध्ययन की व्यवस्था तथा गरीब परिवारों एवं कोरोना वॉरियर्स को निःशुल्क मास्क वितरित कर राहत पहुंचाई गई है।

जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग मंत्री अर्जुनसिंह बामनिया ने बताया कि शैक्षणिक प्रोत्साहन योजनाओं के अंतर्गत 79 हजार 611 आवेदन पत्रों का अनुमोदन कर 75 हजार 891 की स्वीकृति जारी की गई है। स्वास्थ्यकर्मियों की ओर से मास्क तैयार कर गरीब परिवारों एवं कोरोना वॉरियर्स को निःशुल्क वितरित किए जा रहे हैं।

इस वर्ष में 3.1 लाख जनजाति किसानों को 5 किलोग्राम उन्नत किस्म के संकर मक्का बीज किट का वितरण, 13 हजार पशुपालकों को पशु आहार खरीदने पर 5 रूपए प्रति किलोग्राम अनुदान, 5 हजार भूमिहीन अकुशल श्रमिकों को आधुनिक टूल किट का वितरण तथा 4 हजार जनजाति युवाओं को रोजगार आधारित कौशल विकास प्रशिक्षण का लक्ष्य रखा गया है। कुसुम योजना के अन्तर्गत 5 हजार जनजाति किसानों को सोलर पम्प लगाने के लिए अनुदान दिया जाएगा। छात्रावासों में निवासरत छात्र-छात्राओं के अध्ययन की ऑनलाइन व्यवस्था की जा रही है। स्माइल-एप के माध्यम से उन्हें ऑनलाइन अध्ययन प्रक्रिया से जोड़ा गया है।

डीएस ग्रुप का प्रोजेक्ट पुरूस्कृत

उदयपुर (विज्ञप्ति)। डीएस ग्रुप के प्रमुख सीएसआर प्रोजेक्ट 'वाटर इकोनॉमिक जोन' को इंडिया सीएसआर अवार्ड के 8वें संस्करण में 'जल संरक्षण' श्रेणी में कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी में उत्कृष्टता के लिए सर्टिफिकेट ऑफ रेकग्निशन के साथ पुरूस्कृत किया गया। यह सम्मान डीएस ग्रुप को वॉटर इकनॉमिक जोन में इंटीग्रेटेड वॉटर शेड डेवलपमेंट प्रोजेक्ट के अंतर्गत, उदयपुर के कुराबड़ और अलसीगढ़ के लगभग 11,000 हेक्टेयर क्षेत्र में विस्तृत 26 गांवों के 24000 से अधिक ग्रामीण और आदिवासी लोगों को लाभ प्रदान करने के लिये दिया गया। डीएस ग्रुप के निदेशक अंशु दीवान ने कहा कि राजस्थान में हमारे जल संरक्षण प्रयासों के लिए इंडिया सीएसआर अवार्ड्स 2020 द्वारा मान्यता प्राप्त होने पर बेहद खुशी है। हमारा प्रयास राजस्थान में सामुहिक और सतत प्रयासों के साथ पानी के अभाव को दूर करना हैं।

वेदांता द्वारा हिन्दुस्तान जिंक के 7 फ्रंटलाइन लीडर्स सम्मानित

उदयपुर (विज्ञप्ति)। वेदांता का बड़ा उद्देश्य समाज, समुदाय और देश को पुनः लौटाना है। राष्ट्रीय समृद्धि और सतत विकास की दिशा में 'द ग्रेटर गुड' के लिए कार्य करना हमारे डीएनए में है। यह बात वेदांता के चैयरमेन अनिल अग्रवाल ने वेदांता केयर्स की शुरू की गयी अनूठी पहल के बाद कही।

इसका आयोजन वेदांता द्वारा 7 अलग अलग स्थानों पर कोविड 19 में राहत कार्यों के लिए किए गये सहयोग हेतु प्रोत्साहन और सम्मानित करने के लिए किया गया। इस अवसर पर अग्रवाल ने हिन्दुस्तान जिंक से संबद्ध 7 फ्रंटलाइन लीडर्स को चैयरमेन अवार्ड देने की घोषणा की। ज़िंक की सखी परियोजना के संचालन हेतु मंजरी फाउण्डेशन द्वारा स्वयं सहायता समूह की महिलाओं द्वारा ग्रेन बैंक की स्थापना कर 10 टन से अधिक खाद्यान्न जरूरतमंदों तक पहुंचाने और एक लाख से अधिक मास्क बना कर कोरोना योद्धाओं और ग्रामीणों को उपलब्ध कराने के लिए सम्मानित किया। श्रीनाथ ट्रावेल एजेंसी, टेक्नोमिन कंस्ट्रक्शन लिमिटेड एवं हिन्दुस्तान ज़िंक के कर्मचारी देबांशु चटर्जी, विनय कुमार, अनागत आशीष एवं ऋषिराज शेखावत को जरूरतमंदों तक सहायता प्रदान करने में योगदान हेतु चैयरमेन अवार्ड की घोषणा की।

पीएच.डी. का हुआ ऑनलाईन वाईवा

उदयपुर (विज्ञप्ति)। कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत ने बताया कि जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डिम्ड टू बी विवि द्वारा पहला पीएच.डी. वायवा नवीन विश्नोई का 'छात्र समुदाय की कार्य क्षमता बढ़ाने में अभिभावकों एवं अध्यापकों के मनोविज्ञान का तार्किक विश्लेषण' विषय पर ऑनलाईन हुआ। सौराष्ट्र विवि गुजरात के प्रो. हितेश शुक्ला ने करीब एक घंटे तक विश्नोई का ऑनलाईन वाईवा लिया। विश्नोई ने अपना शोधकार्य डॉ. निरू राठौड़ के निर्देशन में किया।

इस दौरान 'ज्योतिष शास्त्र और महामारी' विषयक एक संस्कृत वेबिनार के आयोजन में सारंगदेवोत ने कहा कि जन्मपत्रिका के हर ग्रह, लग्न एवं राशि हमारे स्वास्थ पर प्रभाव जरूर डालती है। कुछ सरल ज्योतिष उपाय द्वारा व्यक्ति की रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाकर हम इस बीमारी से कुछ हद तक बचाव कर सकते हैं। मुख्य वक्ता महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विवि मूंदडी के कुलपति डॉ. श्रेयांश द्विवेदी ने कहा कि ज्योतिषशास्त्र एक निर्मल चक्षु है। विशिष्ट अतिथि डॉ. नवीन शर्मा ने कहा कि महामारी के निवारण के लिए दुर्गा सनातनी देवी है जो समस्त ब्रमाण्ड में व्याप्त है। अथरवेद में ऐसे मंत्र हैं जिससे महामारी पर काबू पाया जा सकता है। डॉ. उपेन्द्र भार्गव ने कहा कि जो ज्योतिष पर विश्वास नही रखता वह अल्पज्ञ है। वेबिनार में 450 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

टैफे ने एक लाख एकड़ की मुफ़्त खेती कराई

उदयपुर (विज्ञप्ति)। टैफे भारत की दूसरी और दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी ट्रैक्टर निर्माता कंपनी (संख्यानुसार), ट्रैक्टर्स एंड फार्म इक्विपमेंट लि. ने 01 अप्रैल, से राजस्थान, उत्तरप्रदेश और तमिलनाडु में किसानों के लिए, अपने जेफार्म सर्विसेज़ प्लेटफॉर्म के माध्यम से, मुफ्त ट्रैक्टर रेंटल सेवा शुरू की थी।

90 दिनों के लिए चलाई जा रही यह सेवा 30 जून तक जारी रहेगी। इस स्कीम के तहत एक लाख एकड़ से अधिक खेती का कार्य हुआ। इस रेंटल सेवा से फसल के महत्वपूर्ण मौसम में हजारों किसानों को लाभ हुआ है। टैफे द्वारा इस सामाजिक पहल का उद्देश्य किसान समुदाय को कोविड-19 के आर्थिक प्रभाव से बचाना तथा रबी की महत्वपूर्ण फसलों की कटाई और खरीफ की फसलों की तैयारी के मौसम के दौरान छोटे किसानों की आजीविका के प्रभाव को कम करना है।

होम्योपैथी दवा की एक लाख शिशियां निशुल्क बांटी

उदयपुर (विज्ञप्ति)। शहर के श्रीकृष्णा तिरुपति विहार वेलफेयर सोसायटी, पूला के निवासियों ने आयुष मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा अनुमोदित होम्योपैथी दवा

आर्सेनिक एल्ब जोकि कोरोना से बचाव एवं इम्यून पावर बढ़ाने में बहुत सहायक है की एक लाख शीशियों का उदयपुर शहर और आसपास के क्षेत्रों में निशुल्क वितरण किया। नरेंद्र गुप्ता के सुझाव एवं वरिष्ठ होम्योपैथी चिकित्सक डॉ. रवि भारद्वाज के निर्देशानुसार नरेंद्र गुप्ता, राजेंद्र शर्मा, दिव्य सुहालका, डूंगर कोठारी, अनिल पारीख एवं नितिन पारीक द्वारा कॉलोनीवासियों के सहयोग से कमेटी बनाकर एक लाख शीशियों का संस्थानों, सोसायटी एवं स्वयंसेवी कार्यकर्ताओं के माध्यम से वितरण किया गया। सुहालका ने बताया की दवा की शीशियां तैयार करने में कॉलोनी की संगीता जैन, अर्चना सुहालका, नीलेश कोठारी, कविता पारीख, सुनीता सोनी, रश्मि गुप्ता, दीपिका पारीख, भावना रेमतिया, भारती पारीख, कशिश सप्रा तथा अन्य का विशेष योगदान रहा।

सहारा में 4,10,682 कार्यकर्ताओं को पदोन्नति

उदयपुर (विज्ञप्ति)। इस समय व्यवसाय के हर क्षेत्र के छोटे-बड़े व्यावसायिक प्रतिष्ठानों से बड़ी संख्या में कर्मचारियों की छंटनी की खबरें लगातार आ रही हैं। इस स्थिति के चलते वेतनभोगी कर्मचारियों में भय व्याप्त है कि पता नहीं कब किसकी नौकरी चली जाये और कब किसका परिवार रोजी-रोटी के लिए मोहताज हो जाये। सहारा इंडिया परिवार की आर्थिक गतिविधियां भी लॉकडाउन के चलते प्रभावित हुई हैं और सहारा इंडिया परिवार भी एक असामान्य स्थिति का सामना कर रहा है।

सहारा इंडिया परिवार विश्व का वह विशाल परिवार है जिसके विभिन्न उद्यमों से आज 14 लाख कार्यकर्ता जुड़े हुए हैं और सुरक्षित तरीके से अपनी आजीविका अर्जित कर रहे हैं। सहारा इंडिया परिवार अपने कार्यकर्ताओं को हमेशा अपने परिवार का सदस्य मानता रहा है और अपने कार्यकर्ताओं के हितों को सर्वोपरि रखता रहा है। तमाम कठिनाइयों के बावजूद सहारा इंडिया परिवार ने यह निर्णय लिया है कि उसके किसी भी उद्यम से किसी भी कार्यकर्ता की कोरोना महामारी की वजह से छंटनी नहीं की जाएगी। सभी कार्यकर्तागण पूरी सुरक्षा के साथ यथावत कार्य करते रहेंगे।

एचडीएफसी बैंक गांवों में 'समर ट्रीट' प्रस्तुत करेगा

उदयपुर (विज्ञप्ति)। एचडीएफसी बैंक ने देश में दूरदराज के गांवों में समर ऑफर प्रस्तुत करने की अपनी योजनाओं की घोषणा की। बैंक ने अपना ग्रामीण अभियान, 'समर ट्रीट्स' प्रस्तुत किया है, जिसमें व्यापारियों, वेतनभोगी तथा स्वरोजगारी ग्राहकों की बदलती जरूरतों को पूरा करने के लिए आकर्षक ऑफर हैं। कोविड-19 का प्रसार रोकने के प्रयासों ने उपभोक्ताओं की जीवनशैली एवं मांगों को परिवर्तित कर दिया है। वर्क फ्रॉम होम एवं स्कूल फ्रॉम होम के कारण फोन, टैबलेट, कंप्यूटर एवं संबंधित एक्सेसरीज़ की मांग बहुत बढ़ गई है। सुरक्षित डिजिटल पेमेंट्स एवं निजी परिवहन की मांग भी बढ़ रही है। समर ट्रीट्स गोल्ड लोन, 2-व्हीलर के लिए लोन, कंज्यूमर ड्यूरेबल्स के लिए फाईनेंस या फिर कोई अन्य बैंकिंग/फाईनेंशल जरूरत को पूरा कर सकेंगे। यह अभियान का दिनेशकुमार त्यागी, सीईओ, सीएससी एसपीवी तथा स्मिता भगत, कंट्री हेड, गवर्नमेंट एवं इंस्टीट्यूशनल बिज़नेस, ईकॉमर्स तथा स्टार्टअप्स, एचडीएफसी बैंक द्वारा वर्चुअल रूप से लॉन्च किया गया।

फुटपाथ पर सौ वर्ष........

(पृष्ठ एक का शेष)

वे बताते हैं - सन् 1902 में नाथद्वारा में श्रीनाथ बाबा से इजाजत लेकर दादाजी के. एम. अग्रवाल उदयपुर आ गये और राणाप्रताप नगर रेलवे स्टेशन पर अखबार बेचने का काम शुरू किया। प्लेटफार्म पर घूमते यात्रियों का ध्यान आकृष्ट कर अखबार बेचते। ठहरी हुई गाड़ी का डिब्बा-डिब्बा भी छानते।

ऐसे करते रेलवे वालों का ध्यान इनकी ओर गया। दादाजी का यह काम उन्हें अच्छा लगा तो बैठने की उचित जगह ही नहीं दी, रहने के लिए क्वार्टर भी दे दिया।

वे कथा की तरह सुनाते हैं- वह देसी जमाना था। गांवों तक के लोग रेल देखने आते और अचरज करते। राणाजी को दाद देते। कहते, देबारी का निंगोट मंगरा काट-कूट कर, सफां पोलाकर उसमें से रेल निकाली। राणा फतैसिंघ जैसा राजा जहां हो वहां की प्रजा की पांचों आंगल्यां घी मांय तरबतर। उनके बाद हुए राणाजी भूपालसिंघ बड़ा दानी दयालु। उनके लिए तो कहावत ही चल पड़ी- 'ताल तो भूपाल ताल,, राण तो भूपाल राण।'

तब इन-मीन दो-तीन अखबार दिल्ली के हिन्दुस्तान और नवभारत टाइम्स आते थे। दादाजी आठ-दस प्रतियां मंगवाकर बेचते। उनके तीन पुत्र हुए। उनमें से श्रीकृष्णजी ने चित्तौड़, बसन्तीलालजी ने मावली तथा पूरनमलजी ने उदयपुर रेलवे स्टेशन पर अखबार बेचने का काम सम्भाला। यह बेल आगे बढ़ी। पूरनजी के मैं, महेन्द्रजी और दिनेशजी तीन पुत्र हुए। उनमें मैंने उदयपुर में कलेक्ट्री के बाहर, महेन्द्रजी के पुत्र हेमन्त ने यहीं रेलवे स्टेशन पर, बसंतीलालजी के पुत्र नरेन्द्र ने मावली तथा श्रीकृष्णजी के पुत्र गोपाल ने चित्तौड़ रेलवे स्टेशन पर काम सम्भाला हुआ है।

हेमेन्द्रजी ने कहा, सन् 1975 से उन्होंने कलेक्ट्री के बाहर फुटपाथ पर अखबार बिछाकर बेचना शुरू किया। ऊपरवाले की कृपा से वर्तमान में वे पांच सौ तरह की पत्र-पत्रिकाएं रखते हैं। इनमें दैनिक से लेकर साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक के साथ कलैण्डर, राशिफल, टीपणा आदि भी हैं। यहां से गुजरने वालों में 50-60 व्यक्ति एवरेज ऐसे होते हैं जो यहीं खड़े-खड़े मनचाहा अखबार उठाते हैं और पढ़कर पुन: रख चलते बनते हैं। डेढ़ सौ-दो सौ व्यक्ति खरीद कर पढ़ने वाले होते हैं।

खरीददारों में पढ़ने वाले बालक, बालिकाएं और महिलाएं भी होती हैं जो बालहंस, छोटू-मोटू, गृहलक्ष्मी, सहेली, होम मेकर, फ्यूचर, फॉर्ब्स, मनोहर कहानियां, दादा-दादी के नुस्खे, दल्हन की मेहंदी, व्रत कथा ले जाना पसंद करती हैं। आउटलुक, इण्डियाटुडे जैसी साहित्यिक पत्रिकाएं पढ़े-लिखे लोगों की पसंदीदा हैं। सबके लिए निशुल्क सेवा 'जल सेवा' रहती है जिसे वे गुलाबजल, केवड़ा की बूंद डालकर खुशबूदार और स्वादिष्ट किये रहते हैं। पानी के मटके साफ सुथरी जगह स्वच्छ जल लिए सदाबहार रहते हैं। पानी कलेक्ट्री के पिछवाड़े से भरकर लाते हैं। मौसम के अनुसार पानी का उठाव सर्दी में घटता और गर्मी में बढ़ता रहता है।

हां यह कहना तो रह ही गया, हेमेन्द्रजी का यह नाम कोई नहीं जानता। गेला की झोंपड़ी तरह हर गुजरने वाला जैसे 'राम-राम' कहता पाया जाता है वैसे ही हेमेन्द्रजी 'जय भोलेनाथ' कहते हैं। कोई उन्हें इलु तो कोई भोलेनाथ का प्यार भरा सम्मान देकर खुश होता है।

उदयपुर में एक नहीं, अनेक ऐसे सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थान, संस्थाएं, क्लब, फाउण्डेशन, परिषद, ट्रस्ट, निगम, पीठादि केन्द्र हैं जो प्रशंसा सम्मान के बिगुल बांकिये बजाते रहते हैं मगर भोलेनाथ जैसे सर्वत्र व्याप्त होकर भी कहीं नजर नहीं आते। किसी को चिढ़ाने के लिए ही सही, 'इलु-इलु हाय-हाय' कहते जरूर कभीकभाक सुनने को मिल जाता है।

प्राचीन राजस्थानी साहित्य के........

(पृष्ठ तीन का शेष)

शेखावतजी बड़े दिलेर, साहसी और समझबाज पराक्रम वाले इंसान थे। अपने अध्ययन अध्यवसाय तथा निरन्तर लेखन को उन्होंने जरा भी शिथिल नहीं होने दिया। इस दौरान वे बीकानेर स्थित राजस्थानी भाषा साहित्य और संस्कृति अकादमी के अध्यक्ष बनाये गये किन्तु भाई लोगों ने वहां भी उन्हें चैन से नहीं रहने दिया।

इस सम्बन्ध में मुझे किसी से कोई जानकारी नहीं मिली। शेखावतजी ने भी कोई सूत्र नहीं दिया किन्तु 12 सितम्बर 1990 के पत्र में उन्होंने मुझे लिखा- 'भाई देवजी और अन्य मित्र-स्नेहियों को भी मेरा आभार पहुंचाइयेगा। अकादमी के सम्बन्ध में उत्पन्न व्यवधान शीघ्र ही समाप्त हो जाएगा। सरकार संकट विमोचन करने की सोच चुकी है। आप उदयपुर के पत्रों में मेरी साहित्यिक सेवाओं और सरकार द्वारा नियुक्ति पर साहित्यकारों के विचार छपवाने का प्रयत्न करें।'

मैंने यह कार्य अपना स्नेहशील मैत्री-दायित्व निभाते किया। इस पर उन्होंने मुझे 21 नवम्बर 1980 के पत्र में लिखा- 'मेरे पर लिखित सचित्र लेख मिल गया है। आपने बहुत सुन्दर और अपने जैसे स्नेह-सम्बन्ध रहे और हैं, उसी के अनुरूप लिखा है। बड़ी प्रसन्नता हुई है। यहां मित्रों को दिखाया तो सबही ने सराहना की है। अत्यन्त आभारी हूं। अकादमी वाले मामले पर उच्च न्यायालय ने टांग मार दी है। यह राजनैतिक उथल-पुथल के कारण सावधानी न बरतने से हुआ है।'

भैरोसिंह शेखावत जब मुख्यमंत्री थे तब राजस्थानी भाषा की संवैधानिक मान्यता को लेकर जिन पांच विद्वानों की कमेटी बनाई गई उसमें डॉ. कोठारी भी थे। सौभाग्यसिंहजी उस कमेटी के संयोजक थे लेकिन राजनैतिक इच्छाशक्ति के अभाव में मान्यता का यह मसला अब तक अधरझूल में लटका हुआ है।

सौभाग्यसिंहजी जैसे स्पष्टवादी और सुलझे हुए विचारों के थे वैसी ही उनकी लेखनी कहीं भी अपठनीय एवं उलझनभरी नहीं थी। उनका लिखा एक-एक अक्षर माला के मणके की तरह अपनी ओप लिये है। जब भैरोसिंह शेखावत उपराष्ट्रपति थे तब शेखावतजी ने दिल्ली में रह उनके अभिनन्दन ग्रन्थ का कार्य हाथ में लिया था। मैंने भी एक रचना भेजी थी पर वह कार्य संभवत: पूरा नहीं हो सका।

मुंबई में बैंक मैनेजर के पद पर कार्यरत शेखावतजी के बड़े पुत्र धर्मवीरसिंह ने बताया कि 22 जुलाई 1924 को सौभाग्यसिंहजी का जन्म हुआ और 92 वर्ष की उम्र में 10 दिसंबर 2016 को अंतिम स्वांस ली।

लम्बे समय तक प्राचीन राजस्थानी साहित्य की शोध-खोज करते हुए एक सजग जौहरी की तरह अनेक रत्नों को अपने परस से आभामय बनाया जो अनजान धूमिल तथा अंधेरे की उनींदी में बेखबर थे। उन्होंने इस धरोहर के सौभाग्य बनकर उसे जो शोभना दी उससे आगे आने वाले विद्वान्, शोधार्थी भी मणिधारी सर्प की तरह प्रकाश पाते रहेंगे।

पेसेफिक डेन्टल कॉलेज एवं हॉस्पिटल टॉप 30 में जगह बनाने वाला राजस्थान का एकमात्र कॉलेज

उदयपुर (का. सं.)। मानव संसाधन विकास मंत्रालय (भारत सरकार) के नेशनल इंस्टीट्युशनल रैकिंग फ्रेमवर्क (एनआईआरएफ) की जारी वर्ष

2020 की रैकिंग में देबारी स्थित पेसेफिक डेन्टल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल ने देश के प्रथम 30 डेन्टल कॉलेजों में स्थान प्राप्त किया है। गत 20 वर्षों से संचालित पेसेफिक डेन्टल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल, डेन्टल कॉलेज रैकिंग में टॉप 30 में जगह बनाने वाला प्रदेश का एकमात्र डेन्टल कॉलेज है। इस रैकिंग के लिये कॉलेज को एनआईआरएफ द्वारा स्थापित मापदंडो हेतु परखा गया जिसमें पेसिफिक डेन्टल कॉलेज खरा उतरा।

सनबर्ड द्वारा आमरस का आनंद

बांसवाड़ा (विज्ञप्ति)। आम जनमानस में एक कहावत बहुत प्रसिद्ध है कि शक्करखोरे को शक्कर मिल ही जाती है। वाकये के अनुसार परपल

सनबर्ड का जोड़ा घर के बाहर बने छोटे बगीचे में प्रतिदिन फूलों का मकरंद पीने आता था। गत दिनों जब फूलों से इस पक्षी को मकरंद नहीं मिला तो यहीं अहाते में आमरस के पापड़ बनाने वाली थाली पर पहुंचा और काफी देर तक अपनी टेढ़ी चोंच के भीतर स्ट्रा की भांति जीभ से जमकर आमरस पीया। इस पक्षी के जोड़े के आमरस का लुत्फ उठाते फोटोग्राफर जय शर्मा ने फोटो क्लिक किया। फूलों से मकरंद चूसती परपल सनबर्ड का आमरस को चाव से पीने का आश्चर्यजनक व्यवहार शोध का विषय है।

डॉ. महेन्द्र भानावत का महत्वपूर्ण साहित्य

डॉ. महेन्द्र भानावत की 100 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनमें से कुछ तो अप्राप्य हैं। उनकी लिखित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें इस प्रकार हैं-

पुस्तक का नाम	मूल्य
लोकनाट्य परंपरा	अप्राप्य
मरवण मांडे मांडणा	अप्राप्य
मेहंदी राचणी	अप्राप्य
काजल भरियो कूंपलो	अप्राप्य
भारतीय लोकनाट्य	1500/
परंपरा का लोक	475/
आदिवासी लोक	350/
जनजाति जीवन और संस्कृति	295/
महाराष्ट्र के लोकनृत्य	200/
आदिवासी जीवनधारा	395/
जनजातियों के धार्मिक सरोकार	150/
राजस्थान के लोकनृत्य	200/
गुजरात के लोकनृत्य	200/
राजस्थान के लोक देवी देवता	150/
भारतीय लोकमाध्यम	75/
अजूबा भारत	200/
पाबूजी की पड़	50/
लोककलाओं का आजादीकरण	250/
उदयपुर के आदिवासी	250/
निर्भय मीरां	250/
रंग रूड़ो राजस्थान	100/
कुंवारे देश के आदिवासी	100/
जिन्हें मैं जानता हूं	100/
जैन लोक का पारदर्शी मन	150/
गवरी	60/
राजस्थान के थापे	150/
कठपुतली	60/
जनजातियों में गाथा गायकी	350/

मुनि सुधर्म सागर का देवलोक गमन

उदयपुर (विज्ञप्ति)। आदिनाथ मानव कल्याण समिति के संस्थापक मुनि सुधर्म सागर का देवलोक गमन हो गया। वे 78 वर्ष के थे। दोपहर में अशोकनगर स्थित गैस शवदाह गृह में उनका अन्तिम संस्कार किया गया।

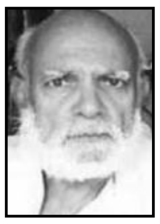

समिति के सचिव यशवंत तलेसरा ने बताया कि कविता गांव में मुनि की तबीयत खराब होने पर उन्हें एमबी चिकित्सालय लाया गया। यहां उपचार के दौरान उनका देहांत हो गया। उनके अनुयायियों में शोक की लहर छा गई। वे काफी समय से अस्वस्थ चल रहे थे। देवलोक गमन पर डोल यात्रा निकाली जानी थी लेकिन प्रशासनिक पाबन्दियों के चलते गैस शवदाह गृह में अन्तिम संस्कार करना पड़ा। अंतिम यात्रा में यशवंत तलेसरा, श्रमणी आनन्दीबाई, रणजीत मेहता, अनिल वैष्णव, भरत शाह तथा कविता गांव के श्रावक शामिल हुए।

तलेसरा ने बताया कि मूलत: गुजरात निवासी मुनि सुधर्म सागर का बचपन उदयपुर और कविता में बीता। शिक्षा-दीक्षा भी यहीं हुई थी। वे सांसारिक थे। वैराग्य उत्पन्न होने के बाद वे सांसारिक जीवन त्यागकर 38 वर्ष पूर्व दीक्षा ग्रहण कर मुनि बने। हाल ही में उनका 301 दिवस का मौन व्रत समाप्त हुआ था। भडल्या नवमी से उन्होंने पुन: 222 दिन का मौन व्रत लेने का संकल्प लिया था।

रक्तदान शिविर सम्पन्न

उदयपुर (विज्ञप्ति)। नारायण सेवा संस्थान के सेक्टर 4 स्थित मानव मंदिर में रविवार को रक्तदान शिविर सम्पन्न हुआ।

निदेशक वंदना अग्रवाल ने बताया कि वरिष्ठ पत्रकार एवं साहित्यकार विष्णु शर्मा 'हितैषी' की उपस्थिति में सरल ब्लड बैंक की टीम ने डॉ. मनोज के मार्गदर्शन में 16 यूनिट रक्त संग्रहित किया। रक्तदाताओं को प्रशस्ति पत्र दिए गए। दल्लाराम पटेल, भगवान प्रसाद गौड़, महिम जैन और दिलीप सिंह उपस्थित रहे। शुभारंभ पद्मश्री कैलाश मानव के संदेश से हुआ। संचालन प्रवीणसिंह ने किया।

विवाह के विविध संस्कार एवं रीति प्रसंग (4)

पिछले अंक में राजस्थान में प्रचलित विवाह सम्बन्धी विविध संस्कारों एवं लोकाचारों के संबंध में जानकारी प्रस्तुत की गई थी। यहां पढ़िये उससे आगे-

(21) परूसा भेजना :

जो व्यक्ति विवाह में भोजन के लिए नहीं आ पाते हैं उनके लिए, उनके घर भोजन-थाल जिसे 'परूसा' कहते हैं, भेजा जाता है। इस परूसे में जो जीमण (भोजन) बना होता है वह इतनी पर्याप्त मात्रा में रखा जाता है कि उसकी तृप्ति हो जाय। ऐसे विशिष्ट जीमण में लपसी, पूड़ी, चने की दाल, मालपुए, झकोलमा पूड़ी तथा बेसन चक्की या फिर मोतीचूर के लड्डू बनाये जाते हैं।

यह कार्य किसी विशिष्ट व्यक्ति को सौंप दिया जाता है जो अपने साथ लारेवाले (साथ वाले) को लेकर सूची के अनुसार घर-घर परूसा दे आता है। ऐसे परूसे मुख्यत: विधवाओं, अशक्त महिला-पुरूषों के लिए होते हैं।

परूसा देना, परूसा रखना अथवा परूसा पहुंचाना सम्मानजनक कार्य समझा जाता है। शहरों में तो नहीं पर गांवों में यह प्रथा अब भी मिलती है जो टिफिन पहुंचाने के समान ही है।

(22) आरती करना :

दूल्हे द्वारा तोरण चटकाने (वांदने) से पूर्व उसकी सासू द्वारा आरती की जाती है। यह आरती बहिन-बेटियों द्वारा बांस की पतली-पतली खपचियों से लड़की को डायचे में दी जाने वाली थाली में बनाई जाती है।

आरती के ऊपर ही ऊपर आटे का बड़ा दीपक बनाया जाता है जिसमें कपास के बीजों (कपास्यों) में तेल डाल कर अग्नि प्रज्वलित की जाती है।

इस दीपक के अलावा आरती के हर किनारे, जहां-जहां एक खपची दूसरी से मिलती है, छोटे-छोटे दीपक बनाये जाते हैं। उन के नीचे लच्छे की छोटी-छोटी लड़ें तथा उनके नीचे हल्दी मिश्रित आटे की छोटी-छोटी गोटियां लटकाई जाती हैं।

वर के समक्ष जब जगमग करती पूरी आरती लाई जाती है तब लगता है आरती का यह श्रृंगार किसी वधू के सौलह श्रृंगार से कम नहीं है। इसका प्रत्येक दीप वधू के अंग-प्रत्यंग की तरह जगमग झिलमिला रहा है।

तिलक करते समय वर जरा भी अपनी गर्दन नहीं झुका कुछ प्राप्ति की आशा में नखरे खाता अड़ पकड़ लेता है तब सासू द्वारा सोने की चैन पहनाई जाती है।

किसी वर का नाथू नाम रखने पर सासू द्वारा नेग के रूप में नाथ्या नारा दिया जाता है। गाय के छोटे बछड़े (नारक्ये) को नारा कहते हैं।

(23) तोरण वांदना :

विवाह शादियों में तोरण का अर्थ द्वार विशेष से न लेकर काठ की बनी टिकटी विशेष से लिया जाता है जिसके ऊपर ही ऊपर मयूर तथा उसके अगल बगल में चिड़ियाएं बनी होती हैं। ये चिड़ियां एकी की संख्या में 3, 5, 7, 9 तथा 11 तक होती हैं।

यह खाती द्वारा बनाया जाता है जिसे या तो गेरु अथवा हल्दी से पोत दिया जाता है या फिर लाल, पीले, हरे आदि रंगों से रंग दिया जाता है। कहीं-कहीं आसापाला के पत्तों का तोरण भी तैयार किया जाता है।

राजस्थान में प्राय: हर जाति में तोरण वादंने की प्रथा है। यह तोरण अक्सर तलवार से चटकाया जाता है। कहीं-कहीं छड़ी तथा खांडे से चटकाने की प्रथा भी है। यह घोड़ी पर बैठकर वांदा जाता है। सम्पन्न घरों में हाथी पर तोरण चटकाने की परंपरा रही है। कहीं-कहीं केवल बाजोट पर ही तोरण वांदा जाता है।

तोरण युद्ध-स्थल का प्रतीक माना जाता है। राजस्थान में इसकी कई किंवदंतियां प्रचलित हैं। इस संबंधी कई गीत भी मिलते हैं। यथा

(अ)

म्हारो बनो नखराळो रे
हाथी रे होदे तोरण वांदसी।

(ब)

आज म्हारा बनड़ाजी
तोरण आई लुम्याए
सइयां रो मन हरकियो।

(स)

तोरण राज तोरण कामण कणी कीधा।

(द)

अरे खातीड़ा रा बेटा थूं चतर सुजान
तोरणियो घड़लायो चनण किये रूंखरो।

गीतों में दूल्हे को शाही ठाठ से निरखा जाता है।

बना हस्ती कजली देश रो लाइजो
हथणी रे होदे बैठ पधारजो
सोनो लंका देश रो गहनो घड़ाईजो
मोती समदां पार रा
मोत्यां रो चूड़लो पुराइजो
सुख पाल्यां बैठ पधारजो
मोत्यां री लड़ सूं तोरण वांदस्यो।

अर्थात् बनड़ाजी, कजली देश के हाथी लाना। हथिनी पर सुख पालकी में बैठ आना। लंका देश के सोने के आभूषण, समुद्र पार के मोती के गहने, चूड़े में सज्जित हो मंहगे मोतियों की लड़ से तोरण चटकाना।

(24) वर पूंखना :

माया में बिठाने से पूर्व सास द्वारा वर को पूंखने की क्रिया सम्पन्न की जाती है। पांच कुलकियों (मिट्टी की बनी छोटी कुल्हड़) के गले में लच्छा बांधकर सास एक-एक हाथ में कुल्हड़ ले उस पर मेदे-शक्कर से बने छोटे पपड़ी के आकार के तले हुए दो खाजे रख क्रम से दांई और फिर बांई ओर फिर चूड़ी से, खाई से, नथ से वर के वक्षस्थल को छूती हुई पूंखती है। इस समय का गीत हैं-

खाजा सूं वर पूंखिया
राजा रो जीमण होसी
चूड़ी सूं वर पूंखिया
एवाता रो पैरण होसी
रवाई सूं पूंखिया
मईयो विलोवण होसी
नथ सूं वर पूंखिया
राण्या रो जीमण होसी।

अर्थात् खाजे से वर पूंखा, राजा का जीमण होगा। चूड़ी से वर पूंखा,

सुहागिन का पहनावा होगा। बिलौनी से वर पूंखा, छाछ बिलोवणा होगा। नथ से वर पूंखा, रानियों का जीमण होगा।

(25) पाटे उतारना :

दूल्हे द्वारा तोरण चटकाने के पश्चात वर को माया स्थान पर ले जाया जाता है। इधर दुल्हन को पाट पर बिठा स्नान कराया जाता है। फिर मामा उसे पाट पर से उतारने की रस्म करता है और चूंदड़ ओढ़ाता है।

बाद में उसे मायास्थल पर लाया जाकर वर-वधू को गजानंदजी, पूरवज, कुलदेवता आदि के धोक लगवाया जाता है। यहीं उनके अंतरवास्या का गठजोड़ किया जाता है। शादी के बाद सीख अर्थात् विदाई से पूर्व वधू की चोटी आदि की जाती है।

(26) रंग बांटना :

माया के स्थान पर वर-वधू की उपस्थिति में वर के बहन-बहनोई अर्थात् उस घर के जंवाई-बहिन से रंगबंटाई का दस्तूर कराया जाता है। ऐसी स्थिति में दोनों मिलकर एक थाली में पावभर के करीब पीसी हुई मेंहदी अथवा मेंहदी के पाले को नारियल से बंटवाने अथवा पिसवाने का उपक्रम करते हैं और बदले में नेग प्राप्त करते हैं। इसी मेंहदी को हथलेवा जोड़ने के लिए पानी मिलाकर घोल रूप में तैयार कर ली जाती है।

(27) मिलणी करना :

वधू के घर वर तथा वधू के लोगों का आपसी समारोहिक मिलन ही मिलणी करना कहलाता है। इसमें समानधर्मी

समधियों का मिलन होता है जैसे वर पक्ष का दादा, पिता, चाचा है तो वधू पक्ष से भी दादा, पिता, चाचा का मिलन कराया जाता है।

यह प्रसंग वधू पक्ष परिवार द्वारा वर पक्ष के समधियों-बरातियों के स्वागत-मिलन का द्योतक है। इसमें वधू पक्ष वाला पहले वर पक्ष के बराती को तिलक करता है और नारियल देता है। बदले में वधू पक्ष वाला भी तिलक कर आपस में एक-दूसरे को मुजरा करते हैं।

(28) रद घर :

रद घर से तात्पर्य उस विशेष कक्ष, ओवरा-ओवरी से है जिसमें सामूहिक जीमण के लिए बनाई गई सामग्री रखी जाती है। इसमें हर किसी का प्रवेश वर्जित रहता है। मिष्ठान्न सामग्री का सर्वप्रथम गजानंदजी को भोग (धूप-बत्ती) दिया जाता है।

कक्ष के दरवाजे के बाहर पाटा लगा दिया जाता है जिस पर वे व्यक्ति तैनात रहते हैं जिन्हें रद घर का कार्य सौंपा होता है। ये परोसकारी करने वाले को भीतर से लाकर सामग्री देते हैं।

रद से ऋद्धि होती है। ऐसा हर जगह होता है। कहीं-कहीं रद घर में गजानंदजी को ठीक से स्थापित नहीं करने के कारण जीमण सामग्री का टोटा, अभाव रह जाता है। ऐसी स्थिति में निमंत्रित व्यक्तियों को बिना भोजन किये निराश लौटना पड़ता है। गजानंदजी के टूटमान होने पर जितने व्यक्तियों का भोजन बनता है उससे कहीं अधिक संख्यक लोगों के जीमने के बाद भी भोजन सामग्री बची रहती है।

भोग से पूर्व इस बात का पूरा ध्यान रखा जाता है कि कोई उसे चख नहीं ले। चखने पर वह सामग्री झूठी मानी जाती है। ऐसी सामग्री का भोग लगने पर देवता घोर नाराज हो जाते हैं और विघ्न खड़ा कर देते हैं।

(-प्रस्तुति : शब्द रंजन टीम)

- क्रमश:

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।